औक़ातुस्सलात

बारह माह की

नफ़्ल नमाज़ें



बारह महीनों की नफ़िल नमाज़ें

(औक़ातुस्सलात)

मजमूआ नफ्ल नमाज़-रोज़ा और फज़ाइले अय्याम

मुरत्तबा

अ़ल्लामा सय्यद शाह तुराबुलहक़ क़ादिरी

मुतर्जिम

मोहम्मद नौशाद आलम चिश्ती निज़ामी

इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल

1. **मोहर्रमुल हराम** हदीस शरीफ़ में है कि अफ़ज़ल रोज़ा रमज़ान के बाद मोहर्रम के महीने में रोज़ा है और अफ़ज़ल नमाज़, नमाज़े फ़ज्र के बाद नमाज़े तहज्जुद है। (मुस्लिम)

एक रिवायत में है मोहर्रम में रोज़ा रखो। अल्लाह तआला ने गुज़श्ता कौम के गुनाह इस महीने में बख़्शे थे और आइन्दा भी अल्लाह तआला कई कौमों पर रुजूअ करेगा और उनके गुनाह बख़्शेगा। (अहमद व तिर्मिज़ी)

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी कौम को जिसकी तादाद छः लाख थी इस मोतबर्रक महीने की दसवीं तारीख़ को फ़िरऔने लईन की गुलामी से निजात मिली थी और फ़िरऔन और उसकी लाखों फ़ौज दरियाए मिस्र में उसी रोज़ गर्क़ करके सफ़हए हस्ती से मिटा दी गयी थी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने शुक्रियतन उस रोज़ रोज़ा भी रखा था।

हुज़ूर ने फ़रमाया! हम भी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की इक़्तेदा में रोज़ा रखेंगे (बुख़ारी शरीफ़) चुनांचे आप और सहाबए कराम दसवीं मोहर्रम का रोज़ा रखा करते थे (बुख़ारी) एक रिवायत में है कि 9 मोहर्रम का भी रोज़ा रखो और दसवीं का भी ताकि यहूदियों के ख़िलाफ़ होजाए दसवीं मोहर्रम के रोज़े को आशूरा का रोज़ा भी कहते हैं इस रोज़े का सवाब इतना है कि एक शख़्स के एक साल के तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं अफ़सोस कि इस वक़्त के मुसलमान इस मोतबर्रक महीने में रोज़ा रख कर भी फ़ाइदा नहीं उठाते। इस महीने में जो शख़्स आशूरा के दिन अहलो अयाल पर खाने की वुसअत करेगा अल्लाह तआला उसके घर में बरकत देगा।

2. **सफ़रुल मुज़फ्फर** इस महीने की कोई ख़ास ख़ूबी क़ुरआन व हदीस में मौजूद नहीं है और न ही कोई ख़ास इबादत इस महीने में है हां नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर माह की तेरहवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं तारीख़ों में रोज़ा रखा करते थे इस महीने की इन तारीख़ों में रोज़े रखना मसनून है लोग इस महीने में शादी ब्याह करने को अच्छा नहीं समझते यह बिल्कुल गलत है।

3. **रबीउल अव्वल** इस महीने में हमारे नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत शरीफ़ हुई जिन के आने से इस दुनिया में बहार आगई और क़ियामत तक मौसमे बहार रहेगा बशर्ते कि हुज़ूर के अहकाम

पर अ़मल करते रहें।

4. रबीउल आख़िर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस महीने की 13,14,15 तारीख़ को नफ़्ली रोज़े रखा करते थे इस लिए इन तारीख़ों में रोज़ा रखना मसनून है इस महीने को हुज़ूर ग़ौसे आज़म से ख़ुसूसी निस्बत है इस लिए उनके ईसाले सवाब के लिए ग्यारहवीं शरीफ़ भी की जाती है।

5. जमादियुल अव्वल इस महीने की 13,14 और 15 तारीख़ों में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नफ़्ली रोज़े रखा करते थे।

6. जमादियुल आख़िर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने उसूल और आदत के मुताबिक़ हर माह की 13.14.15 तारीख़ों में रोज़ा रखा करते थे इस लिए इन तारीख़ों में रोज़ा रखना मसनून है। इस महीने को ख़लीफ़ए अव्वल सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से निस्बत है इस लिए इस महीने में इनका ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्रे ख़ैर होना चाहिए।

7. रजबुल्-मुरज्जब क़ुरआन मजीद में चार महीनों को शहरुल्-हराम कहा गया है *कालल्लाहु तआ़ला अश्शहरुल हरामु बिश्शहरिल् हराम0* वह चार महीने यह हैं। मोहर्रम, रजब, ज़ीक़अदा, ज़िलहिज्जा, ज़मानए जाहिलीयत में भी लोग इन महीनों का बड़ा एहतराम करते थे हत्ता कि अगर उनके बाप दादा का क़ातिल भी इस महीने में मिल जाता उसको भी नहीं छेड़ते थे क़ुरआन मजीद में इन महीनों को हुरमत वाला कहा गया है। मुसलमान इन महीनों में मुदाफ़िआना जंग कर सकते हैं और अगर काफ़िर सुकून में हैं तो उन पर चढ़ाई नहीं की जा सकती है। रजब की सताईसवीं शब को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मेअ़राजे जिस्मानी हुई। इस शब में आप पर और आपकी उम्मत पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ हुई थीं लेकिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मशवरे के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बार--बार दुआओं के सबब सिर्फ़ पाँच नमाज़ें रह गईं।

8. शअ़बानुल्-मुअ़ज़्ज़म इस महीने को माहे मुबारक कहा गया है इस माहे मुबारक में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रोज़े रखा करते थे। सहाबए कराम ने आपसे वजह दरियाफ़्त की तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस माहीने में बन्दों के अ़मल अल्लाह रब्बुल्--आ़लमीन के रू बरू पेश किए जाते हैं लिहाज़ा मैं चाहता हूं कि मेरे आमाल रोज़े की हालत में पेश हों। (नसाई)

हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु–वजहुहू से रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़रमाया शअबान की पन्द्रहवीं रात यानी शबे बरात में क़ियाम किया करो यानी नफ़्ल नमाज़ पढ़ो और दिन में रोज़ा रखो इस रात अल्लाह तआ़ला आफ़ताब गुरूब होते ही आसमाने दुनिया की तरफ़ ख़ुसूसी तवज्जोह मबज़ूल फ़रमाता है कि, है कोई बन्दा जो मुझसे अपने गुनाहों की मुआ़फी मांगे और मैं उसके गुनाह बख़्शूं' है कोई बन्दा जो रिज़्क़ मांगे और मैं उसे रोज़ी दूं। है कोई मुसीबतज़दा जिसकी मुसीबत को मैं रफ़अ़ कर दूं। गुरूबे आफ़ताब से तुलूअ़े सुबह सादिक़ तक रहमत व मग़फ़िरत और बख़्शिश की यह आवाज़ें लगाई जाती रहती हैं।

9. **रमज़ानुल्-मुबारक** क़ुरआन व हदीस में रमज़ानुल मुबारक के बे इन्तिहा फ़ज़ाइल बयान किए गये हैं इस माहे मुबारक को तीन हिस्सों में तक़्सीम किया गया है इसका पहला अ़शरा रहमत, दूसरा अ़शरा बरकत और तीसरा और आख़री अ़शरा आतिशे जहन्नम से नजात है इस माहे मुक़द्दस में क़ुरआने करीम का नुज़ूल शुरू हुआ इसी माहे मुबारक में लैलतुल् क़द्र भी आती है जिसका ज़िक्र क़ुरआन की सूरए क़द्र में आया है इसी माहे मुबारक में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कई जंगें भी जीती हैं और इसके इलावा बेशुमार फ़ज़ाइल और बरकतें पोशीदा हैं अल्लाह तआ़ला हम सबको इस माहे मुबारक की रहमतों और बरकतों से फ़ैज़याब होने की सआ़दत अ़ता फ़रमाए। (आमीन)

10. **शव्वालुल्-मुकर्रम** रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों से फ़ारिग़ होने के बाद इस माह की पहली तारीख़ को मुसलमान ईद मनाते हैं। ईद से फ़ारिग़ होकर 6 रोज़े रखने मसनून हैं इनको ईद के शश रोज़े भी कहते हैं जो शख़्स ईद के शश रोज़े रखेगा वह ऐसा पाक हो जाएगा जैसा कि अभी माँ के पेट से पैदा हुआ, और जो शख़्स इस दिन के रोज़े रखेगा तो गोया उसको सारे जहां का सवाब मिलेगा। (मुस्लिम) अगर माहे शव्वाल में शादी और रुख़्सती की जाए तो फ़ज़ीलत से ख़ाली नहीं है।

11. **ज़ीक़अ़दा** माहे शव्वाल व ज़ीक़अ़दा व दस तारीख़ें ज़िलहिज्जा की हज के महीने कहलाते हैं। हज ज़िलहिज्जा की नवीं तारीख़ को होता है मगर हज के अफ़आ़ल व आमाल इन महीनों ही में शुरू हो जाते हैं। नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अकसर ज़ीक़अ़दा के महीने में उमरा

अदा किया आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का उमरा सुलह हुदैबिया और उमरतुल क़ज़ा ज़ीक़अदा ही के महीने में हुए थे।

12. **ज़िलहिज्जा** यह इस्लामी और क़मरी साल का बारहवां और आख़री महीना है यह महीना हज का कहलाता है क्योंकि हज जैसी मुक़द्दस इबादत इस माहे मुबारक में रखी गई है। इस महीने की फ़ज़ीलत अहादीसे मुबारका में कसरत से आई हैं। एक रिवायत में है कि जो नेक अ़मल भी इस अ़शरा में किया जाए ख़्वाह बड़ा हो या छोटा अल्लाह तआ़ला को प्यारा मालूम होता है इन दिनों के अ़मल और दिनों के बराबर नहीं हो सकते इस पर सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क्या इन दिनों में जेहाद फ़ी सबीलिल्लाह के अ़मल के बराबर भी नहीं हो सकते? फ़रमाया नहीं। मगर वह मुजाहिद कि जो ख़ुदा की राह में मारा गया और उसका माल भी छीन लिया गया। (बुख़ारी)

एक रिवायात में है कि जिस रोज ज़िलहिज्जा का चाँद हो उस रोज़ से लेकर 13 ज़िलहिज्जा की रात तक कसरत से तस्बीह व तहलील पढ़ते रहना हाचिए। (बुख़ारी)

एक और रिवायत में है कि इस अ़शरे में कसरत से سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ *सुबहानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु०* पढ़ा करो।

नवीं ज़िलहिज्जा के दिन को यौमे अ़रफ़ा कहते हैं अल्लाह तआ़ला उस रोज़ अपने बन्दों को इस क़द्र बख़्शता है कि शैतान भी ज़लील होकर अपने सर पर ख़ाक डालने लगता है। अ़रफ़ा का रोज़ा रखना मसनून है जो शख़्स इस दिन का रोज़ा रखेगा तो गोया उसने अपने एक साल पिछले और एक साल आइन्दा के गुनाह बख़्शवाए इस महीने की 10 से 12 तारीख़ तक मुसलमान सुन्नते इब्राहीमी को पूरा करने के लिए जानवर की क़ुरबानी करते हैं इस लिए इस ईद को ईदे .क़ुरबान या ईदुल अज़हा भी कहते हैं।

मोहर्रमुल्-हराम

इस्लामी महीनों में सबसे पहला महीना मोहर्रमुल्–हराम है। और मोहर्रम को मोहर्रम इस लिए कहा जाता है कि इस महीने में जंग व क़ेताल हराम है। यह महीना अल्लाह तआ़ला का महीना है और इस महीने में बहुत सी फ़ज़ीलतें आई हैं।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के महीना मोहर्रम की बुज़ुर्गी करो। जिसने मोहर्रम की बुज़ुर्गी की अल्लाह तआला उसे जन्नत में बुज़ुर्गी अता करेगा और दोज़ख की आग से महफ़ूज़ रखेगा।

(अनीसुल्–वाइज़ीन)

और नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने ज़िलहिज्जा के आख़िर दिन और मोहर्रम के पहले दिन रोज़ा रखा तो गोया उसने साल भर रोज़े रखे और उसके साठ बरस के गुनाह बख़्शे गए और फ़रमाया जिसने पहली, दसवीं और आख़री दिन मोहर्रम के रोज़ा रखा अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में तीस शहर बनाता है और फ़रमाया जिसने अव्वल ता दस मोहर्रम रोज़े रखे गोया उसने दस हज़ार बरस इस तरह इबादत की कि रात को क़ियाम किया और दिन को रोज़ा रखा और फ़रमाया जो शख़्स दोज़ख की आग अपने ऊपर हराम करना चाहे वह मोहर्रम के रोज़े रखे और मोहर्रम के महीने में शबे जुमा को इबादत करने वाला ऐसा है गोया उसने शबे क़द्र पाई। (अनीसुल् वाइज़ीन)

इस माहे मुक़द्दस में यौमे आशूरा यानी दसवीं मोहर्रम का दिन बहुत ही मुअज़्ज़म व मुकर्रम है। इस दिन बड़े–बड़े वाक़ियात रूनुमा हुए। मसलन आदम अलैहिस्सलाम का पैदा होना। उनका जन्नत में दाख़िल होना और उनकी तौबा क़बूल होना हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का पैदा होना उन पर नमरूद की आग का गुलज़ार होना और उनके बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का फ़िदिया (क़ुरबानी) दिया जाना और अल्लाह तआला से हम–कलाम होना। और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का पैदा होना। उन्हें तौरेत शरीफ़ का दिया जाना और अल्लाह तआला से हमकलाम होना। बनी इसराईल के लिए दरिया फाड़ा जाना, फ़िरऔन और उसके लश्कर का ग़र्क़ होना। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का मछली के पेट से बर–आमद होना। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का पैदा होना। कर्बो बला का मअ़रका पेश आना। हज़रत इमाम आली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का जामे शहादत नोश करना और इस दिन अल्लाह तबारक व तआला का कुर्सी, क़लम, आस्मानों, ज़मीनों, पहाड़ों और समुन्दरों और फ़रिश्तों का पैदा फ़रमाना और यौमे आशूरा असहाबे

कहफ़ का करवटें बदलना और इसी दिन क़ियामत का ज़ुहूर होना वग़ैरह।
(मासब्त मिनस्सुनह, ग़ुनयतुत्–तालिबीन)

मोहर्रम में जुमअ़ के दिन नवाफ़िल

जो शख़्स मोहर्रम के हर जुमा चार रकअ़त इस तरह पढ़े कि हर रकअ़त में बाद अलहम्द शरीफ़ के इकत्तीस बार सूरए इख़लास पढ़े तो गोया उसने तमाम आस्मानी किताबों को पढ़ा और उनकी हर आयत के बदले में एक ग़ुलाम आज़ाद किया। (अनीसुल्–वाइज़ीन)

नवाफ़िल शबे आ़शूरा

1. दो रकअ़त नमाज़ रौशनीए क़ब्र के लिए आ़शूरा की रात पढ़ी जाती है। इसकी तरकीब यह है कि हर रकअ़त में बाद अलहम्द शरीफ़ के तीन–तीन बार सूरए इख़लास पढ़ने से अल्लाह तआ़ला क़ियामत तक उसकी क़ब्र को रौशन रखेगा।

2. चार रकअ़त नफ़्ल इसी शबे आ़शूरा को पढ़ी जाती है और हर रकअ़त में बाद अलहम्द शरीफ़ के सूरए इख़लास पचास मर्तबा पढ़े और इसके पढ़ने से पचास बरस के गुनाह पिछले सालों के और पचास बरस के गुनाह आइन्दा सालों के बख़्श दिए जाते हैं।
(मासब्त मिनस्सुनह, सफ़हा 37 फ़ज़ाइलुल्–अय्याम वस्–शहूद सफ़हा 269 रुक्नुद्दीन किताबुस्–सलात सफ़हा 159)

3. सौ रकअ़त नवाफ़िल पढ़े और हर रकअ़त में फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास तीन बार पढ़े और बाद सलाम सत्तर मर्तबा यह दुआ़ पढ़े।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ
اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ؕ

सुबहानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इलाहै इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु व ला हौल व ला क़ुव्वत: इल्ला बिल्लाहिल्–अ़लीय्यिल अ़ज़ीम०

(तुहफ़ा मोहर्रमुल्–हराम 1394 हि० सफ़हा 7 मुसन्निफ़ मौलाना ख़लील अहमद ख़ां बरकाती)

आ़शूरा के दिन नवाफ़िल

1. आ़शूरा के दिन जो कोई चार रकअ़त नमाज़ इस तरह पढ़े कि हर रकअ़त में बाद अलहम्द शरीफ़ के पचास मर्तबा सूरए इख़लास पढ़े अल्लाह

तआला उसके अगले और पिछले पचास बरस के गुनाह मुआफ़ फ़रमाता है और मलाए आला में उसके लिए नूरके हज़ार मिम्बर बनाता है।

(अनीसुल्-वाइज़ीन सफ़हा 221 ग़ुनयतुत्-तालिबीन सफ़हा 427)

2. चार रकअ़त इस तरह पढ़ी जाए कि हर रकअ़त में बाद अलहम्द शरीफ़ के पन्द्रह मर्तबा सूरए इख़लास पढ़ी जाए और इसका सवाब हज़राते हसनैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की अरवाहे ताहिरा को नज़र करे तो क़ियामत के दिन यह दोनों हज़रात पढ़ने वाले की शफ़ाअ़त करेंगे।

हज़रत इमाम शिबली रहमतुल्लाह अ़लैह ने यह नमाज़ पढ़ी तो उन दोनों हज़रात रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने ख़्वाब में उन्हें बशारत दी कि तुमने हमें इस नमाज़ का सवाब नज़र किया है हम क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त करके तुम्हें जन्नत में ले जाएंगे और यह सिर्फ़ तुम्हारे लिए नहीं बल्कि हर ऐसा करने वाले की शफ़आ़त करेंगे।

(अनीसुल्-वाइज़ीन सफ़हा 221, रुकनुद्दीन किताबुस्सलात सफ़हा 157)

3. जो कोई छः रकअ़त एक ही सलाम से नफ़्ल अदा करे हर रकअ़त में बाद अलहम्द शरीफ़ के छः सूरतें पढ़े। वश्शम्स, इन्ना अन्ज़लना, इज़ाज़ुल् ज़िलतिल् अर्ज़, सूरए इख़लास, सूरए फ़लक़, और सूरए नास बाद नमाज़ सज्दा में जाकर *क़ुल या अय्युहल् काफ़िरून* पढ़े तो अल्लाह तआला से जो हाजत तलब करेगा पूरी होगी।

(रुकनुद्दीन किताबुस्सलात. 159, तुहफ़ा मोहर्रमुल्-हराम 1394 हि0)

4. जो कोई आ़शूरा के रोज़ चार रकअ़त नमाज़ पढ़े कि हर रकअ़त में बाद अलहम्द शरीफ़ के ग्यारह मर्तबा सूरए इख़लास पढ़े तो अल्लाह तआ़ला उसके पचास बरस के गुनाह बख़्श देता है और उसके लिए एक नूरानी मिम्बर बनाता है। (फ़ज़ाइलुल अय्याम वलशहूद सफ़हा 270)

5. चार रकअ़त दो सलाम के साथ पढ़े। हर रकअ़त में बाद अलहम्द शरीफ़ के सूरह इज़ा ज़ुलज़ेलतिल अर्ज़ सूरह *क़ुल या अय्युहल काफ़िरून* और सूरए इख़लास एक-एक दफ़ा पढ़े बाद नमाज़ सत्तर दफ़ा दुरूद शरीफ़ पढ़े। यह रिवायत हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है।

(ग़ुन्य तुत्तालबीन स0 427)

नोटः- दिन में नवाफ़िल तुलूअ़े आफ़ताब के बीस मिनट बाद से लेकर ज़वाल से पहले तक पढ़े जा सकते हैं। ज़वाल के वक़्त पढ़ना या कोई सज्दा

करना हराम है। बाज़ लोग ज़वाल के वक़्त भी नफ़्ल नमाज़ पढ़ते रहते हैं लिहाज़ा उन्हें मना किया जाए।

फज़ीलते सौमे आशूरा

हज़रत सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर मोमिन ज़मीन भर सोना ख़र्च करे तो भी आ़शूरा की फ़ज़ीलत न पा सकेगा इस दिन रोज़ादार के लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाते हैं जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो।

आ़शूरा के दिन रोज़ा रखने वाले को ऐसे साठ बरस की इबादत का सवाब मिलता है जिसने रात को इबादत की हो और दिन में रोज़ा रखा हो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसन आ़शूरा के दिन रोज़ा रखा उसे दोज़ख़ की आग मस न करेगी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया आ़शूरा के दिन क़ुरआन शरीफ की दस आयतें पढ़ने वाला तमाम साल की तिलावत का सवाब पाता है और आज की एक नेकी हज़ार नेकी के बराबर है। आज के दिन रोज़ादार को हर साअ़त के एवज़ में सात सौ बरस की इबादत का सवाब मिलता है और गुनाहों से बिल्कुल पाक हो जाता है।

(अनीसुल–वाइज़ीन 221 सफ़हा)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रजियल्लाहु तआ़ला अन्हु से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब मदीनए तय्यबा तशरीफ़ लाए तो यहूद को देखा कि आ़शूरा के दिन रोज़ा रखते हैं। आपने उनसे दरियाफ़्त फ़रमाया कि यह क्या है? तो उन्होंने कहा कि यह अच्छा दिन है। इस दिन अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और बनी इसराईल को उनके दुश्मनों से नजात दी और उन्होंने रोज़ा रखा। उस वक़्त आपने फ़रमाया तुमसे ज़्यादा हम हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को मानने के मुस्तहिक़ हैं पस आपने रोज़ा रखा और इसका हुक्म दिया।

(मासब्त मिनस्सुन्ना 13 सफ़हा)

और इन्हीं से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर मैं हयाते ज़ाहिरी में रहा तो आ़शूरा से एक दिन पहले या एक दिन बाद के रोज़े रखने का हुक्म दूंगा।

(मासब्त मिनस्सुन्ना 21 सफ़हा)

नोटः– आशूरा के रोज़ा के साथ नवीं या ग्यारहवीं तारीख का रोज़ा साथ रखा जाए ताकि यहूद की मुखालिफत हो।

आशूरा के दिन नेक आमाल

नमाज पढ़ना, यतीम के सर पर हाथ फेरना, गुस्ल करना, आँखों में सुर्मा डालना, इस दिन अपने गुनाहों की तौबा करना, बीमार की अयादत करना, फोकरा को पानी, दूध या शरबत पिलाना, खाना खिलाना, रोज़ा रखना, अपने अहलो अयाल के लिए दस्तरख्वान को कुशादा करना, यानी वसीअ पैमाने पर खाने का एहतेमाम करना, सदका व खैरात करना, आपस में सुलह करना, आलिम या मुतअल्लिम की ज़ियारत करना, दुआ मांगना, खौफे खुदा से रोना, नमाजे जनाज़ा तलाश करके पढ़ना, ज़ियारते कुबूर और ज़ियारते कुबूरे वालिदैन करना, कुरआन मजीद की तिलावत करना, हजरत हुसैन और शोहदाए करबला रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन का फातिहा दिलाना उनके ईसाले सवाब के लिए नियाज, खिचड़ा, हलीम वगैरह पकाना मुसलमान से मुसाफहा करना।

(अनीसुल–वाइजीन [illegible] तुहशोहूद, मासबता मिनस्सुन्ना)

माहे सफर

माहे सफर की पहली रात के नफ्ल माहे सफर की पहली रात में नमाजे इशा के बाद हर मुसलमान को चाहिए कि चार रकअत नमाज़ पढ़े। पहली रकअत में सूरए फातिहा के बाद *कुल या अय्युहल काफिरून* पन्द्रह दफा पढ़े और दूसरी रकअत में सूरए फातिहा के बाद *कुल हुवल्लाहु अहद* पन्द्रह मर्तबा पढ़े और तीसरी रकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए फलक पन्द्रह मर्तबा पढ़े और चौथी रकअत में सूरए नास पन्द्रह मर्तबा पढ़े। सलाम के बाद चन्द बार [illegible] *इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तईन* पढ़े फिर सत्तर मर्तबा दुरूद शरीफ पढ़े तो अल्लाह तआला उसको बड़ा सवाब अता करेगा और उसे हर बला से महफूज रखेगा। (राहतुल कुलूब)

माहे सफर के आखरी चहार शम्बा की नमाज

सफर के आखरी बुध के बाद गुस्ल करे और चाश्त के वक्त दो रकअत नफ्ल नमाज पढ़े कि हर रकअत में अलहम्द शरीफ के बाद ग्यारह–ग्यारह

दफा *कुल हुवल्लाहु अहद* पढ़े और सलाम फेर कर यह दुरूद शरीफ सत्तर दफा पढ़े।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदि निन्नबीयिल-उम्मियि व अला आलिही व अस्हाबिही व बार-क व सल्लम०

और इसके बाद यह दुआ पढ़े–

اَللّٰهُمَّ اصْرِفْ عَنِّيْ سُوْءَ هٰذَا الْيَوْمِ وَاعْصِمْنِيْ مِنْ
وَنَجِّنِيْ عَمَّا اَصَابَ فِيْهِ وَمِنْ [illegible] بِفَضْلِكَ
يَا دَافِعَ الشُّرُوْرِ وَمَالِكَ [illegible] بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَصَلَّى
عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ الْاَمْجَادِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ [illegible]

अल्लाहुम्मस्रिफ अन्नी [illegible] वअसिम्नी सूअहू व नज्जिनी अम्मा अस-[illegible]-सातिही व कुरबातिही [illegible] अरहमर्राहिमीन व [illegible] व बारिक व सल्लिम०

(हक़ाइक़ [illegible])

[illegible] हर रकअत में अल्हम्दु शरीफ़ [illegible] कुल हुवल्लाहु अहद पढ़े। [illegible] और दूसरे [illegible] अल्लाह तआला [illegible] (जवाहर गैबी)

[illegible]

[illegible] फज़ीलत वाला महीना है और [illegible] हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम [illegible] नाज़िल हुए इस लिए यह बड़ी रहमत [illegible] है।

[illegible] अव्वल [illegible] नमाज़े इशा [illegible] रकअत में सूरए फ़ातिहा के

बाद सूरए इखलास तीन–तीन मर्तबा पढ़े फिर बाद सलाम के एक हज़ार मर्तबा दुरूदे पाक पढ़े।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदि निन्–नबीय्यिल उम्मीय्यी व रहमतुल्लाहि व ब–रकातुहू०

इस नमाज़ की बहुत फ़ज़ीलत है और इन्शा अल्लाह तआला यह नमाज़ और दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से फ़ैज़याब होंगे। लेकिन इसका ख़्याल रखें कि बा वज़ू सोएं।

2. माहे मुबारक की बारह तारीख़ बाद नमाज़े ज़ुहर ब–नीयते हदिया बरूहे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बीस रकअत नमाज़ दस सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए इख़लास इक्कीस–इक्कीस मर्तबा पढ़े।

इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब होगी बा वज़ू सोया जाए।

वज़ाइफ़

1. पहली तारीख़ से बारह तारीख़ तक रोज़ाना बाद नमाज़े इशा एक हज़ार मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ना बहुत अफ़ज़ल है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन् निन् नबीय्यिल उम्मीय्यी व रहमतुल्लाहि व ब–रकातुहू०

इस दुरूद शरीफ़ को पढ़ कर बा वज़ू सोजाए तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब होगी।

2. रबीउल्–अव्वल की बारहवीं, तेरहवीं और चौदहवीं शब को बाद नमाज़े इशा इस दुआ को सात हज़ार सात सौ इकतालीस मर्तबा पढ़े, दुआ यह है।

يَا بَدِيْعَ الْعَجَائِبِ بِالْخَيْرِ يَا بَدِيْعُ

या बदीअल अ़जाइबि बिलख़ैरि या बदीऊ०

यह दुआ तरक़्क़ीए रिज़्क़ के लिए बहुत अफ़ज़ल है मगर यह ख़्याल रखिए कि बारह तारीख़ पीर या जुमेरात या जुमा की हो।

3. माहे रबीउल्–अव्वल में सब महीनों से ज़्यादा दुरूद पाक पढ़ने की फ़ज़ीलत है। कसरत से इस माह में दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए।

रबीउल्-आख़िर

माहे रबीउल–आख़िर भी निहायत अफ़ज़ल तरीन महीना है और इस माह में भी दुरूद पाक ज़्यादा पढ़ना चाहिए।

नफ्ल नमाज़ 1. पहली शब बाद नमाज़े मग़रिब और क़ब्ल नमाज़े इशा आठ रकअत नमाज़ चार सलाम से पढ़े और पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए कौसर तीन बार दूसरी में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए काफ़िरून तीन बार फिर तीसरी चौथी, पाँचवीं, छटी, सातवीं और आठवीं रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास तीन–तीन बार हर रकअ़त में पढ़े इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को बेशुमार नमाज़ों का सवाब अ़ता होगा।

2. माहे रबीउल–आख़िर की पहली, पन्द्रहवीं उन्तीसवीं शब बाद नमाज़े इशा चार रकअत नमाज़ दो सलाम से पढ़े। हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास पाँच–पाँच दफ़ा पढ़े इन्शा अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को परवरदिगार आलम रोज़े महशर मग़फ़िरत फरमाएगा।

जमादियुल्-अव्वल

माहे जमादियुल्–अव्वल निहायत बुज़ुर्ग और फ़ज़ीलत का महीना है और इसमें इबादत का बहुत सवाब है।

नफ्ल नमाज़ 1. इस माह की पहली तारीख़ बाद नमाज़े मग़रिब आठ रकअत नमाज़ चार सलाम से पढ़े हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास ग्यारह–ग्यारह मर्तबा पढ़े यह नमाज़ बहुत अफ़ज़ल है और इसके पढ़ने से इन्शा अल्लाह तआ़ला बेशुमार इबादत का सवाब पाक परवरदिगार की तरफ़ से अ़ता किया जाएगा।

2. पहली तारीख बाद नमाज़े इशा बीस रकअत नमाज़ दस सलाम से पढ़े हर रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए इख़लास पढ़े बाद सलाम के एक सौ मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े। इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ की बरकत से अल्लाह पाक उसे बेशुमार नमाज़ों का सवाब अ़ता करेगा।

जमादियुल-आख़िर

माहे जमादियुल–आख़िर बड़ा खैरो बरकत का महीना है और इस माह की इबादत अफ़ज़ल तरीन है यह महीना इस्तिक़बाले माहे रजब है और इसकी इबादत का मकसद माहे रजब की हुरमत है।

नफ़्ल नमाज़ 1. पहली तारीख़ बाद नमाज़े इशा बारह रकअत नमाज़ छः सलाम से पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास एक–एक दफ़ा पढ़े इन्शा अल्लाहुल अज़ीम इस नमाज़ के पढ़ने वाले को परवरदिगारे आलम बहुत बड़ी इबादत का सवाब अता फ़रमाएगा।

2. जमादियुल–आख़िर की इक्कीसवीं शब से आख़री तारीख़ तक रोज़ाना हर शब को बाद नमाज़े इशा बीस रकअत नमाज़ दस सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए इख़लास एक–एक बार पढ़े। अल्लाह तआला इस नमाज के पढ़ने वाले को हुरमते रजबुल–मुरज्जब का सवाब अता करेगा इस नमाज़ का मकसद यह है कि माहे रजब के मुबारक महीने का इस्तिक़बाल इबादते इलाही से किया जाए इस लिए इस नमाज़ की फ़ज़ीलत है।

नफ़्ल रोज़ा जमादियुल–आख़िर की आख़री तारीख़ को रोज़ा रखना इस्तिक़बाले रजब के लिए अफ़ज़ल है।

रजबुल-मुरज्जब

रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि माहे रजब की बेशुमार फ़ज़ीलत है और इस माह मुबारक की इबादत बहुत अफ़ज़ल है। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शादे गिरामी है कि जब माहे रजब का चाँद देखो तो पहले एक मर्तबा यह दुआ पढ़ो।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِىْ رَجَبَ وَشَعْبَانَ وَبَلِّغْنَا اِلٰى شَهْرِ رَمَضَانَ ۝

अल्लाहुम्म बारिक् लना फ़ी रज–ब व शअबा–न व बल्लिग़्ना इला शह्‌रि र–मज़ान०

नफ़्ल नमाज़ 1. माहे रजब की पहली शब क़ब्ल नमाज़े इशा बीस रकअत नमाज़ दस सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए काफ़िरून तीन–तीन मर्तबा और सूरए इख़लास तीन–तीन दफ़ा पढ़े। इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ पढ़ने वाले को अल्लाह पाक क़ियामत

के दिन शहीदों में शामिल करेगा और हज़ार दर्जा उसके बुलन्द करेगा।

2. पहली शब बाद नमाज़े इशा चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए अलम नश्रह एक बार, सूरए इख़लास एक बार सूरए फ़लक़ एक बार, सूरए नास एक बार पढ़े जब दो रकअ़त का सलाम फेर दे तो कल्मए तौहीद तैंतीस मर्तबा और दुरूद शरीफ़ तैंतीस दफ़ा पढ़कर जो भी हाजत हो अल्लाह पाक से तलब करे इन्शा अल्लाह तआला हर हाजत पूरी होगी।

3. माहे रजब की पहली शब बाद नमाज़े इशा दो रकअ़त नमाज़ पढ़े हर रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास पाँच—पाँच मर्तबा पढ़े बाद सलाम के सूरए इख़लास एक सौ मर्तबा पढ़े। इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ की बरकत से अल्लाह पाक उसे सेहत अता फ़रमाएगा। बीमार की सेहत के लिए यह नमाज़ बहुत अफ़ज़ल है।

4. अव्वल शब नमाज़े तहज्जुद के वक़्त दस रकअ़त नमाज़ दो—दो रकअ़त करके पाँच सलाम से पढ़े हर रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए काफ़िरून तीन—तीन मर्तबा सूरए इख़लास तीन—तीन मर्तबा पढ़े बाद सलाम के हाथ उठा कर एक मर्तबा कल्मए तौहीद पढ़े फिर एक मर्तबा यह दुआ पढ़े اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ۔

अल्लाहुम्म ला मानि—अ लिमा अअ़तै—त वला मुअ़ती लिमा म—न—अ—त वला यन—फ़ऊ ज़लजदादि मिन्कल जददु0

यह दुआ पढ़कर अल्लाह पाक से जो भी हाजत हो तलब करे इन्शा अल्लाह जो दुआ मांगे वह कबूल होगी।

5. माहे रजब की पहली शब जुमा बाद नमाज़े इशा दो रकअ़त नमाज़ पढ़े। पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए बक़रह का आख़री रुकूअ *आमनर—रसूलो* से *काफ़िरीन* तक सात मर्तबा पढ़े फिर दो रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए हश्र की आख़री आयात *हुवल्लाहुल—लज़ी* ता *हकीम0* सात मर्तबा पढ़े बाद सलाम के बारगाहे इलाही में जो भी हाजत हो तलब करे इन्शा अल्लाह जो दुआ मांगे कबूल होगी हर मुराद के लिए यह नमाज़ बहुत अफ़ज़ल है।

6. माहे रजब के पहले जुमा को ज़ुहर और अस्र के दर्मियान चार रकअत नमाज़ एक सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के आयतल् कुर्सी सात मर्तबा सूरए इख़लास पाँच मर्तबा पढ़े बाद सलाम के पचीस मर्तबा पढ़े। لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْكَبِيْرِ الْمُتَعَالِ

लाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल् कबीरिल्–मुतआलि0

फिर एक सौ मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़े।

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ غَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

अस्तग़फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवलहय्युल क़य्यूमु ग़फ़्फ़ारुज़्ज़ुनूबि व सत्तारुल उयूबि व अतूबु इलैहि0

इसके बाद एक सौ मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर जो भी दुआ करे ख़्वाह दुनियावी या दीनी इन्शा अल्लाह तआला बारगाहे इलाही में ज़रूर कबूल होगी।

7. माहे रजब की सातवीं, पन्द्रहवीं या सताइसवीं किसी शब बाद नमाज़े इशा बीस रकअत नमाज़ दस सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए इख़लास एक एक बार पढ़े। हक़ तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को दुनियावी और दीनी तमाम आफ़तों से महफ़ूज़ रखेगा और पुल–सिरात का रास्ता उस पर आसान होगा।

8. पन्द्रहवीं शब को बाद नमाज़े इशा बीस रकअत नमाज़ दस सलाम से पढ़नी है हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास एक–एक दफ़ा पढ़े इन्शा अल्लाह तआला अल्लाह पाक इस नमाज़ का बेहद सवाब अता फ़रमाएगा और इस नमाज़ के पढ़ने वाले के गुनाह ऐसे झड़ेंगे जैसे दरख़्त के सूखे पत्ते झड़ जाते हैं।

9. माहे रजब के किसी जुमा की शब को बाद नमाज़े इशा दो रकअत नमाज़ पढ़े हर दो रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के आयतल्कुर्सी ग्यारह मर्तबा सूरए ज़िलज़ाल ग्यारह मर्तबा सूरए तकासुर ग्यारह मर्तबा पढ़े बाद सलाम के बारगाहे इलाही में अपने गुनाहों की मग़फ़िरत तलब करे इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ पढ़ने वाले के तमाम गुनाह मुआफ़ फ़रमाकर अल्लाह उसकी बख़शिश फ़रमाएगा।

नफ़्ल नमाज़ शबे मेअराज 1. माहे रजब की सताइसवीं शब को बारह

रकअ़त नमाज़ तीन सलाम से पढ़े पहली चार रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए क़द्र तीन–तीन मर्तबा हर रकअ़त में बाद सलाम के सत्तर मर्तबा बैठ कर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ *ला इलाह इल्लल्लाहुल मलिकुल हक़्क़ुल मुबीन०* पढ़े दूसरी चार रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए नस्र तीन–तीन मर्तबा हर रकअ़त में बाद सलाम के बैठ कर सत्तर मर्तबा *ला इलाह इल्लल्लाहुल मलिकुल हक़्क़ुल मुबीन०* पढ़े तीसरी चार रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए इख़लास तीन–तीन मर्तबा हर रकअ़त में बाद सलाम बैठ कर सत्तर मर्तबा सूरए अलम नशरह पढ़े।

फिर बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में दुआ मांगे इन्शा अल्लाह तआला जो हाजत होगी वह अल्लाह पाक क़बूल फ़रमाएगा।

2. माहे रजब की सताईसवीं शब को बीस रकअ़त नमाज़ दस सलाम से पढ़े हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास एक एक दफ़ा पढ़े।

इन्शा अल्लाह तआला जो कोई यह नमाज़ पढ़े तो अल्लाह तआला उसके जानो माल की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा।

3. सताईसवीं शब को चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास सताईस–सताईस मर्तबा पढ़े बाद सलाम के सत्तर मर्तबा दुरूद पाक पढ़े और अपने गुनाहों की मग़फ़िरत तलब करे इन्शा अल्लाह तआला परवरदिगारे आलम अपनी रहमते कामिला से उसके गुनाह मुआफ़ फ़रमा कर उसकी मग़फ़िरत फ़रमाएगा।

4. माहे रजब की सताईस तारीख़ बाद नमाज़े ज़ुहर चार रकअ़त नमाज़ एक सलाम से पढ़े पहली रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए क़द्र तीन–तीन मर्तबा, दूसरी में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए इख़लास तीन दफ़ा, तीसरी में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए फ़लक़ तीन मर्तबा, चौथी में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए नास तीन दफ़ा पढ़े। बाद सलाम के दुरूद पाक एक सौ मर्तबा और इस्तिग़फ़ार एक सौ मर्तबा पढ़े। यह नमाज़ हर मुराद के लिए इन्शा अल्लाह तआला बहुत अफ़ज़ल है।

1. **वज़ाइफ़** माहे रजब में पहली तारीख़ से हर नमाज़ के बाद तीन मर्तबा इस दुआ को पढ़ने की बहुत फ़ज़ीलत है।

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَاِلَيْهِ تَوْبَةَ عَبْدٍ
ظَالِمٍ لَا يَمْلِكُ لِنَفْسِهٖ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا وَّ لَا مَوْتًا وَّ لَا حَيٰوةً وَّ لَا نُشُوْرًا ؕ

अस्तग़फ़िरुल्लाहल्–अज़ीमल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल हय्युल कय्यूमु0 इलैहि तौबतः अब्दिन् ज़ालिमिल्–ला यम्लिकु नफ़्सहू ज़रवं वला नफ़अंव वला मौतंव् वला हयातंव् वला नुशूरा0

2. रजबुल–मुरज्जब की पन्द्रह तारीख़ को किसी नमाज़ के बाद एक सौ मर्तबा यह इस्तिग़फ़ार पढ़नी बहुत अफ़ज़ल है इस दुआ के पढ़ने वाले की तमाम बुराईयां मिटाकर अल्लाह पाक उसे नेकियों में बदल देगा।

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ غَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ ۞

अस्तग़फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु ग़फ़्फ़ारुज़्ज़ुनूबि व सत्तारुल उयूबि व अतूबु इलैहि0

3. माहे रजब की किसी तारीख़ को नमाज़े ज़ुहर, मग़रिब या इशा की नमाज़ के बाद सूरए कहफ एक बार, सूरए यासीन एक बार, सूरए हामीम एक बार, मआरिज एक बार पढ़े फिर सूरए इख़लास एक हज़ार मर्तबा पढ़े। अल्लाह पाक इन सूरतों के पढ़ने वाले पर ख़ास रहमत व बरकत अता फ़रमाएगा।

नफ्ल रोज़ा हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं माहे रजब के रोज़ों की बहुत बड़ी फज़ीलत है और सताईस तारीख़ के रोज़ा का बहुत सवाब है इस रोज़ा से अज़ाबे क़ब्र, नारे दोज़ख़ से मह़फ़ूज़ रहेगा। माहे रजब के एक रोज़ा का सवाब हज़ार रोज़ा के बराबर है।

शअबानुल्–मुअज़्ज़म

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि माहे शअबानुल्–मुअज़्ज़म बहुत ही बर्गुज़ीदा महीना है। यह मेरा महीना है यानी हु़ज़ूर का महीना है और इस माहे मुबारक की इबादत का बेहद सवाब अल्लाह तआला अता फ़रमाता है।

नफ्ल नमाज़ 1. माहे शअबान की पहली शब बाद नमाज़े इशा बारह रकअत नमाज़ छः सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए इख़लास पन्द्रह–पन्द्रह मर्तबा पढ़े बाद सलाम के सत्तर मर्तबा दुरूद पाक पढ़कर अपने गुनाहों से तौबा करले। इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ की बरकत से

अल्लाह पाक उसके गुनाह मुआफ़ फ़रमा कर दाख़िले जन्नत करेगा।

2. माहे शअ़बान के पहले जुमा की शब बाद नमाज़े इशा आठ रकअ़त नमाज़ एक सलाम से पढ़े और हर रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए इख़लास ग्यारह–ग्यारह दफ़ा पढ़े और इसका सवाब ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को बख़्शे। ख़ातूने जन्नत फ़रमाती हैं कि मैं हरगिज़ जन्नत में क़दम न रखूंगी जब तक कि इस नमाज़ पढ़ने वाले को अपने हमराह दाख़िले जन्नत न करलूं।

3. माहे शअ़बान पहले जुमा की शब नमाज़े इशा के बाद चार रकअ़त नमाज़ एक सलाम से पढ़े और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास तीन–तीन बार पढ़े इस नमाज़ की बहुत फ़ज़ीलत है और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसे उमरे का सवाब अ़ता होगा।

4. शअ़बान के पहले जुमा को बाद नमाज़े मग़रिब और इशा की नमाज़ से पहले दो रकअ़त नमाज़ पढ़े हर नमाज़ में बाद सूरए फ़ातिहा के एक बार आयतल्–कुर्सी, दस बार सूरए इख़लास, एक बार सूरए फ़लक़ और एक बार सूरए नास पढ़े। इन्शा अल्लाह तआ़ला यह नमाज़ तरक़्क़ीए ईमान के लिए बहुत अफ़ज़ल है।

वज़ीफ़ा शअ़बानुल–मुअ़ज़्ज़म की चौदह तारीख़ को बाद नमाज़े अ़स्र आफ़ताब ग़ुरूब होने के वक़्त बावज़ू चालीस मर्तबा यह कल्मात पढ़े।

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ -

लाहौल वला क़ुव्वतः इल्ला बिल्लाहिल अ़लीय्यिल अ़ज़ीम०

अल्लाह पाक इस दुआ़ के पढ़ने वाले के चालीस साल के गुनाह मुआफ़ फ़रमाएगा।

निस्फ़ शअ़बानुल्-मुअ़ज़्ज़म 1. शअ़बान की 14 तारीख़ बाद नमाज़े मग़रिब दो रकअ़त नमाज़ पढ़े हर रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए हश्र की आख़री तीन आयात एक मर्तबा और सूरए इख़लास तीन–तीन दफ़ा पढ़े। इन्शा अल्लाह तआ़ला यह नमाज़ वास्ते मग़फ़िरते गुनाह बहुत अफ़ज़ल है।

2. चौदा शअ़बान क़ब्ल नमाज़े इशा आठ रकअ़त नामज़ चार सलाम से पढ़नी है और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास पाँच–पाँच मर्तबा पढ़े। यह नमाज़ भी बख़्शिशे गुनाह में बहुत ज़ूद असर

है इन्शा अल्लाहुल्–अज़ीम ।

शबे-बरात रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं कि शअबानुल्–मुअज़्ज़म की पन्द्रहवीं शब की इबादत बहुत अफ़ज़ल है फ़रमाया इस शब को अल्लाह पाक बन्दों के लिए बेशुमार दरवाज़े अपनी रहमत के खोल देता है और फ़रमाता है कि कौन है जो आज की शब मुझसे बख़्शिश तलब करे और मैं उसको अज़ाबे दोज़ख़ से नजात देकर उसकी मग़फ़िरत करूं । फ़रमाया आपने कि इस शब की इबादत करने वाले पर दोज़ख़ की आग अल्लाह पाक हराम कर देता है ।

नफ़्ल नमाज़ 1. शअबान की पन्द्रहवीं शब को गुस्ल करे अगर किसी तकलीफ़ के सबब गुस्ल न कर सके तो सिर्फ़ बा वज़ू होकर दो रकअत तहय्यतुल वज़ू पढ़े । हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल्कुर्सी एक बार, सूरए इख़लास तीन तीन मर्तबा पढ़नी है यह नमाज़ बहुत अफ़ज़ल है ।

2. शअबान की पन्द्रहवीं शब दो रकअत नमाज़ पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल्कुर्सी एक बार, सूरए इख़लास पन्द्रह पन्द्रह मर्तबा बाद सलाम के दुरूद शरीफ़ एक सौ दफ़ा पढ़कर तरक्कीए रिज़्क की दुआ करे इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ के बाइस रिज़्क में तरक़्क़ी हो जाएगी ।

3. माहे शअबान की पन्द्रहवीं शब आठ रकअत नमाज़ पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़द्र एक–एक बार सूरए इख़लास पचीस मर्तबा पढ़े मग़फ़िरते गुनाह के वास्ते यह नमाज़ बहुत अफ़ज़ल है ।

इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले की अल्लाह पाक बख़्शिश फ़रमाएगा ।

4. पन्द्रहवीं शब को आठ रकअत नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास दस–दस मर्तबा पढ़े अल्लाह पाक इस नमाज़ के पढ़ने वाले के लिए बेशुमार फ़रिश्ते मुक़र्रर करेगा जो उसे अज़ाबे क़ब्र से नजात की और दाख़िले बहिश्त होने की ख़ुशख़बरी देंगे ।

5. पन्द्रहवीं शब चौदह रकअत नमाज़ सात सलाम से पढ़े और हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए काफ़िरून एक बार सूरए इख़लास एक बार सूरए फ़लक़ एक बार सूरए नास एक बार पढ़े बाद सलाम के आयतल्–कुर्सी एक दफ़ा फिर सूरए तौबा की आख़री आयात *लक़द*

जाअकुम रसूलुन ता *अज़ीम0* एक बार पढ़े। दुनियावी और दीनी मक़ासिद के लिए यह नमाज़ बहुत अफ़ज़ल है।

6. पन्द्रहवीं शब आठ रकअत नमाज़ दो सलाम से पढ़े। पहली रकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए अलम नशरह दस मर्तबा तीसरी में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए क़द्र दस मर्तबा चौथी में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास दस मर्तबा पढ़े फिर चार रकअत इसी तर्कीब से पढ़े। बाद सलाम के सत्तर मर्तबा इस्तिग़फ़ार और सत्तर मर्तबा दुरूद पाक पढ़कर अपने गुनाहों की तौबा करे। इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ पढ़ने वाले के गुनाहे सग़ीरा, कबीरा अल्लाह पाक मुआफ़ फ़रमा कर मग़फ़िरत फ़माएगा।

वज़ाइफ 1. पन्द्रहवीं शब को सूरए बक़रह का आख़री रुकूअ *आमनर्रसूल* से *काफ़िरीन* तक इक्कीस मर्तबा पढ़ना अमन व सलामतीए हिफ़ाज़त जान व माल के लिए अफ़ज़ल है।

2. पन्द्रहवीं शब सूरए यासीन तीन मर्तबा पढ़ने से हस्बज़ैल फ़ाइदे हैं तरक्कीए रिज़्क, दराजीए उम्र नागहानी आफ़तों से महफ़ूज़ रहना इन्शा अल्लाह तआला।

3. शअबान की पन्द्रहवीं शब सूरए दुख़ान सात मर्तबा पढ़नी बहुत अफ़ज़ल है। इन्शा अल्लाह तआला परवरदिगारे आलम सत्तर हाजात दुनिया की और सत्तर हाजात उक़बा की क़बूल फ़रमाएगा।

नफ्ल नमाज़ 15 तारीख़ शअबान की पन्द्रह तारीख़ बाद नमाज़े ज़ुहर चार रकअत नमाज़ दो सलाम से पढ़े पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए ज़िलज़लाल एक बार सूरए इख़लास दस मर्तबा, दूसरी रकअत में बाद सूरए फातिहा के सूरए ताकसुर एक बार सूरए इख़लास दस दफ़ा, तीसरी रकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए काफ़िरून तीन बार, सूरए इख़लास दस मर्तबा, चौथी रकअत में सूरए फातिहा के बाद आयतल्–कुर्सी तीन बार सूरए इख़लास पचीस मर्तबा पढ़े। इस नमाज़ की बेहद फ़ज़ीलत है अल्लाह पाक इस नमाज़ पढ़ने वाले पर ख़ास नज़रे करम क़ियामत के दिन फ़रमाएगा और इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ की बरकत से दीन व दुनिया की भलाई हासिल होगी।

वज़ाइफ 1. माहे शअबान में रोज़ाना नमाज़ के बाद इस दुआ को पढ़ना मग़फ़िरते गुनाह के लिए बहुत अफ़ज़ल है।

أَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيْمَ الَّذِيْ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ إِلَيْهِ تَوْبَةَ
عَبْدٍ ظَالِمٍ لَا يَمْلِكُ نَفْسَهُ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا

अस्तगफिरुल्लाहल्–अजीमल्लजी ला इलाह इल्ला हुवल हय्युल कय्यूमु इलैहि तौबतु: अबदिन जालिमिन् ला यमलिकु नफ्सहू ज़र्रवं वला नफअवं वला मौतवं वला हयातवं वला नुशूरा०

2. रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं कि माहे शअबान में कोई तीन हज़ार मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर मुझको बख्शेगा बरोज़े हश्र उसकी शफ़ाअत करनी मुझ पर वाजिब हो जाएगी।

नफ्ल रोज़ा माहे शअबान की पन्द्रह तारीख़ के रोज़ा की बड़ी फ़ज़ीलत है। जो कोई यह रोजा रखेगा बारी तआला उसके पचास साल के गुनाह मुआफ फरमाएगा।

सूरए यासीन

बाद नमाज मगरिब के छः रकअतें, दो–दो रकअत करके पढ़िए। पहली बार दराज़ीए उम्र बिलखैर, दूसरी बार दाफ़अे बला, तीसरी बार मखलूक का मुहताज न होने की नीयत से हर दोगाना के बाद सूरए यासीन एक बार या सूरए इख़लास इक्कीस बार और इसके बाद दुआए निस्फ शअबानुल–मुअज़्ज़म पढ़िए।

दुआए निस्फ शअबानुल मुअज़्ज़म

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيْهِ ۞ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۞ يَا ذَا الطَّوْلِ وَ
الْإِنْعَامِ ۞ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ ظَهْرَ اللَّاجِيْنَ ۞ وَجَارَ الْمُسْتَجِيْرِيْنَ ۞ وَأَمَانَ الْخَائِفِيْنَ
اَللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِيْ عِنْدَكَ فِيْ أُمِّ الْكِتَابِ شَقِيًّا أَوْ مَحْرُوْمًا أَوْ مَطْرُوْدًا
أَوْ مُقَتَّرًا عَلَيَّ فِي الرِّزْقِ ۞ فَامْحُ اللّٰهُمَّ بِفَضْلِكَ شَقَاوَتِيْ وَحِرْمَانِيْ وَطَرْدِيْ
وَ اِقْتَارَ رِزْقِيْ ۞ وَأَثْبِتْنِيْ عِنْدَكَ فِيْ أُمِّ الْكِتَابِ سَعِيْدًا مَرْزُوْقًا مُوَفَّقًا
لِلْخَيْرَاتِ فَإِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ ۞ فِيْ كِتَابِكَ الْمُنْزَلِ ۞ عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّكَ
الْمُرْسَلِ يَمْحُوا اللهُ مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗ أُمُّ الْكِتَابِ - إِلٰهِيْ بِالتَّجَلِّي
الْأَعْظَمِ فِيْ لَيْلَةِ النِّصْفِ مِنْ شَهْرِ شَعْبَانَ الْمُكَرَّمِ ۞ الَّتِيْ يُفْرَقُ فِيْهَا كُلُّ
أَمْرٍ حَكِيْمٍ وَيُبْرَمُ أَنْ تَكْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَاءِ وَالْبَلْوَاءِ مَا نَعْلَمُ وَمَا لَا نَعْلَمُ وَ

مَا اَنْتَ بِهٖ اَعْلَمُ ط اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ ط وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمْ ط وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ة

अल्लाहुम्म या ज़लमन्नि वला युमन्नु अलैहि या ज़लजलालि वल इकरामि० या जत्तौलि वल इनआमि ला इलाह इल्ला अन्त ज़हरल्लाजी–न व जारल मुस्तज़बिरीन व अमानल खाइफी–न अल्लाहुम्म इन कुन्त क–तबतनी इन्द–क फी उम्मिल किताबि शकीयन अव महरूमन अव मतरूदन अव मुकत्तरन अलिय्य फीर्रिज़्कि फमहु अल्लाहुम्म बिफ़ज़लि–क शकावती व हिरमानी व तरदी वकतितार रिज़्की वसबितनी इन्द–क फी उम्मिल किताबि सईदम मरज़ूकम–मुवफ़्फ़कन लिलख़ैराति फइन्न–क कुल्त व कौलुकलहक्कु फी किताबिकल मुनज़लि अला लिसानि नबीय्यिकल मुरसलि० यमहुल्लाहु मा यशाओ व युसबितु० व इन्दहु उम्मुल किताबि इलाही बित तजल्लियिल आजमि० फी लैलतिन निस्फि मिन शहरि शअ़बानल् मुकर्रमिल्लती युफ़–रकु फीहा कुल्लु अमरिन हकीमिन व युब–रमु अन तकशि–फ़ अन्ना मिनल बलाअि वल बलवाअि मा तअ–लमु व माला तअ–लमु वमा अन्त बिही आलमु इन्न–क अन्तल अअज़्ज़ुल अक–रमु व सल्लल्लाहु तआला अला सय्यिदिना मुहम्मदिंव व अला आलिही व सहबिही व सल्लम० वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल–आलमीन०

दुआए निस्फ़ शअबानुल-मुकर्रम का तर्जुमा

ऐ मेरे अल्लाह तूही सब पर एहसान करने वाला है और तुझपर कोई एहसान नहीं कर सकता ऐ बुज़ुर्गी और मेहरबानी रखने वाले और ऐ बख़्शिश का इनआम करने वाले तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तूही गिरतों का थामने वाला है, बे–पनाहों का पनाह देने वाला है और परेशान हालों का सहारा है। ऐ अल्लाह अगर तूने मुझे अपने पास उम्मुल–किताब में भटका हुआ या महरूम या कमनसीब लिख दिया है तो ऐ अल्लाह अपने फ़ज़ल से मेरी ख्वारी, बद–बख़्ती, रांदगी, और रोज़ी की कमी को मिटा दे और अपने पास उम्मुल–किताब में मुझे ख़ुश नसीब वसीउलरिज़्क़ और नेक कर दे। बेशक तेरा यह कहना तेरी किताब में जो तेरे नबीए मुरसल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़रीए हमें पहुंची है सच है कि अल्लाह जो चाहता है

बना देता है और उसी के पास उम्मुल–किताब है। ऐ ख़ुदा तजल्लीए आज़म का सदका! इस निस्फ शअबाने–मुकर्रम की रात में जिसमें तमाम चीजों की तक़सीम व निफाज होता है मेरी बलाओं को दूर कर ख़्वाह मैं उनको जानता हूं या न जानता हूं और जिनसे तू वाक़िफ़ है। बेशक तूही सबसे बरतर और बढ़कर एहसान करने वाला है। अल्लाह की रहमत व सलामती हो हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर और उनकी आल औलाद और सहाबा पर आमीन०

रमज़ानुल्–मुबारक

हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं कि माहे रमज़ानुल–मुबारक अल्लाह तआला का महीना है बहुत ही बा–बरकत और फज़ीलत वाला महीना है और यह सब्र व शुक्र और इबादत का महीना है और इस माहे मुबारक की इबादत का सवाब सत्तर दर्जा ज़्यादा अ़ता होता है। जो कोई अपने परवरदिगार की इबादत कर के उसकी खुशनूदी हासिल करेगा उसकी बड़ी जज़ा खुदावन्द तआ़ला अ़ता फ़रमाएगा।

वज़ाइफ 1. माहे रमज़ानुल–मुबारक की पहली शब बाद नमाज़े इशा एक मर्तबा सूरए फतह पढ़ना बहुत अफ़ज़ल है।

2. माहे रमज़ान की पहली शब बाद नमाज़े तहज्जुद आसमान की तरफ मुंह करके बारह मर्तबा यह दुआ पढ़नी बहुत अफ़ज़ल है।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ الْقَآئِمُ عَلٰی كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ

ला इलाह इल्ला हुवल हय्युल कय्यूमुल काइमु अ़ला कुल्लि नफ़्सिन बिमा कसबत०

इन वज़ाइफ़ के पढ़ने वाले को बेशुमार नेअ़मतें अल्लाह पाक की तरफ़ से अ़ता की जाएंगी।

3. माहे रमज़ानुल–मुबारक में रोज़ाना हर नमाज़ के बाद इस दुआए मग़फ़िरत को तीन मर्तबा पढ़ना बहुत अफ़ज़ल है।

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِیْمَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ـ اِلَیْهِ تَوْبَةَ عَبْدٍ
ظَالِمٍ لَا یَمْلِكُ نَفْسَهٗ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا مَوْتًا وَّلَا حَیٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا

अस्तग़फ़िरुल्लाहल्–अ़ज़ीमल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल हय्युल कय्यूमु० इलैहि तौबतः अ़ब्दिन ज़ालिमिन ला यमलिकु नफ़्सहु ज़र्रवं वला नफ़अ़वं व मौतंव वला हयातंव वला नुशूरा०

रमज़ान शरीफ़ में हर नमाज़े इशा के बाद रोज़ाना तीन मर्तबा कल्मए तय्यब पढ़ने की बहुत फ़ज़ीलत है अव्वल मर्तबा पढ़ने से गुनाहों की मग़फ़िरत होगी दूसरी दफ़ा पढ़ने से दोज़ख से आज़ाद होगा तीसरी बार पढ़ने से जन्नत का मुस्तहिक़ होगा।

पहली शबे कद्र हुज़ूरे अनवर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत में से जो मर्द या औरत यह ख़्वाहिश करे कि मेरी कब्र नूर की रौशनी से मुनव्वर हो तो उसे चाहिए कि माहे रमजान की शबे कद्र में कसरत के साथ इबादते इलाही बजा लाए ताकि इन मुबारक रातों की इबादत से अल्लाह पाक उसके नामाए आमाल से बुराईयां मिटा कर नेकियों का सवाब अता फ़रमाए। शबे क़द्र की इबादत सत्तर हज़ार शब की इबादतों से अफ़ज़ल है।

नफ़्ल नमाज़ 1. इक्कीसवीं शब को चार रकअत नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए क़द्र एक–एक बार सूरए इख़लास एक मर्तबा पढ़े। बाद सलाम के सत्तर मर्तबा दुरूद पाक पढ़े।

इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले के हक़ में फ़रिश्ते दुआए मग़फ़िरत करेंगे।

2. इक्कीसवीं शब को दो रकअत नमाज पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए क़द्र एक–एक बार सूरए इख़लास तीन–तीन मर्तबा पढ़े।

बाद सलाम के नमाज़ ख़त्म करके सत्तर मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़े। इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ और शबे क़द्र की बरकत से अल्लाह पाक उसकी बख़्शिश फ़रमाएगा।

वज़ीफ़ा माहे रमज़ानुल्–मुबारक की इक्कीसवीं शब को इक्कीस मर्तबा सूरए क़द्र पढ़ना भी बहुत अफ़ज़ल है।

दूसरी शबे कद्र माहे मुबारक की तेईसवीं शब को चार रकअत नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए क़द्र एक–एक बार सूरए इख़लास तीन–तीन मर्तबा पढ़े।

फिर बाद सलाम के सत्तर मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े। इन्शा अल्लाह तआला मग़फ़िरते गुनाह के लिए यह नमाज़ बहुत अफ़ज़ल है।

तेईसवीं शबे क़द्र को आठ रकअत नमाज़ चार सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए क़द्र एक–एक दफ़ा, सूरए इख़लास

एक–एक बार पढ़े।

और बाद सलाम के सत्तर मर्तबा कल्माए तमजीद पढ़े और अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की बख़्शिश तलब करे अल्लाह तआला उसके गुनाह मुआफ़ फ़रमा कर इन्शा अल्लाह तआला मग़फ़िरत फ़रमाएगा।

वज़ीफ़ा तेईसवीं शब को सूरए यासीन एक मर्तबा, सूरए रहमान एक दफ़ा पढ़नी बहुत अफ़ज़ल है।

नफ़्ल नमाज़ 1. माहे रमज़ान की पचीस तारीख़ की शबे कद्र को चार रकअत नमाज़ दो सलाम से पढ़े बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए कद्र एक–एक बार सूरए इख़लास पाँच–पाँच मर्तबा हर रकअत में पढ़े बाद सलाम के कल्माए तय्यब एक सौ दफ़ा पढ़े।

बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त से इन्शा अल्लाह तआला बेशुमार इबादत का सवाब अता होगा।

2. पचीसवीं शब को चार रकअत नमाज़ दो सलाम से पढ़े। हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए कद्र तीन–तीन मर्तबा सूरए इख़लास तीन तीन मर्तबा पढ़े बाद सलाम के सत्तर दफ़ा इस्तिग़फ़ार पढ़े।

यह नमाज़ बख़्शिश के लिए बहुत अफ़ज़ल है।

3. पचीसवीं शबे कद्र को दो रकअत नमाज़ पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए कद्र एक–एक मर्तबा, सूरए इख़लास पन्द्रह–पन्द्रह मर्तबा पढ़े बाद सलाम के सत्तर दफ़ा कल्माए शहादत पढ़े।

यह नमाज़ नजाते अज़ाबे कब्र के लिए बहुत अफ़ज़ल है।

वज़ाइफ़ 1. माहे रमज़ान पचीसवीं शब को सात मर्तबा सूरए दुख़्ख़ान पढ़िये। इन्शा अल्लाह तआला अल्लाह पाक इस सूरह के पढ़ने के बाइस अज़ाबे कब्र से महफ़ूज़ रखेगा।

2. पचीसवीं शबे कद्र को सात मर्तबा सूरए फ़तह पढ़ना हर मुराद के लिए बहुत अफ़ज़ल है।

चौथी शबे कद्र "नफ़्ल नमाज़ें" 1. सताईसवीं शबे कद्र को बारह रकअत नमाज़ तीन सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए कद्र एक–एक मर्तबा सूरए इख़लास पन्द्रह–पन्द्रह मर्तबा पढ़े बाद सलाम के सत्तर मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़े।

अल्लाह तआला इस नमाज़ पढ़ने वाले को नबियों की इबादत का

सवाब अ़ता फ़रमाएगा। इन्शा अल्लाहुल अ़ज़ीम।

2. सताईसवीं शब को दो रकअ़त नमाज़ पढ़े हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़द्र तीन–तीन दफ़ा सूरए इख़लास पाँच–पाँच मर्तबा पढ़े बाद सलाम के सूरए इख़लास सताईस मर्तबा पढ़कर गुनाहों की मग़फ़िरत तलब करे। इन्शा अल्लाह तआ़ला इसके तमाम पिछले गुनाह अल्लाह पाक मुआ़फ़ फ़रमाएगा।

3. सताईसवीं शब को चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए तकासुर एक–एक बार, सूरए इख़लास तीन–तीन मर्तबा पढ़े।

इस नमाज़ पढ़ने वाले पर से अल्लाह पाक मौत की सख़्ती आसान कर देगा। इन्शा अल्लाह तआ़ला उस पर से अ़ज़ाबे क़ब्र भी मुआ़फ़ हो जाएगा।

4. सताईसवीं शब को दो रकअ़त नमाज़ पढ़े। हर रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए इख़लास सात–सात मर्तबा पढ़े बाद सलाम के सत्तर दफ़ा यह तस्बीहे मुअ़ज़्ज़म पढ़े।

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ الَّذِيْ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ

अस्तग़फ़िरुल्लाहल–अ़ज़ीमल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैहि०

इन्शा अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ को पढ़ने वाले अपने मुसल्ले से न उठेंगे कि अल्लाह पाक उसको और उसके वालिदैन के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा कर बख़्श देगा और अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि इस के लिए जन्नत आरास्ता करो और फ़रमाया कि वह जब तक तमाम बहिश्ती नेअ़मतें अपनी आँख से न देख लेगा उस वक़्त तक मौत न आएगी। मग़फ़िरत के लिए यह नमाज़ बहुत ही अफ़ज़ल है।

5. सताईसवीं शबे क़द्र को दो रकअ़त नमाज़ पढ़े। हर रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए अलम नश्रह एक–एक बार सूरए इख़लास तीन–तीन मर्तबा पढ़े बाद सलाम सताईस मर्तबा सूरए क़द्र पढ़े।

इन्शा अल्लाहुल–अ़ज़ीन बेशुमार इबादत का सवाब मिलेगा। यह नमाज़ बहुत अफ़ज़ल है।

6. सताईसवीं शबे क़द्र को चार रकअ़त नमाज़ पढ़े। हर रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए क़द्र तीन–तीन दफ़ा सूरए इख़लास पचास

पचास मर्तबा पढ़े। बाद सलाम सज्दा में सर रख कर एक मर्तबा यह कल्मात पढ़े।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर०

इस के बाद जो हाजते दीनी व दुनियावी तलब करे वह इन्शा अल्लाह तआला बारगाहे बारी तआला में क़बूल होगी।

वज़ाइफ 1. सताईसवीं शबे क़द्र को सातों हाम्–मीम पढ़े। यह सातों हाम् मीम अज़ाबे क़ब्र से नजात और मग़फ़िरते गुनाह के लिए अफ़ज़ल हैं।

2. सताईसवीं शब को सूरए मुलुक सात मर्तबा पढ़ना मग़फ़िरते गुनाह के लिए बहुत फ़ज़ीलत की बात है।

पाँचवीं शबे क़द्र 1. उन्तीसवीं शबे क़द्र को चार रकअत नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए क़द्र एक–एक बार सूरए इख़्लास तीन–तीन मर्तबा पढ़े बादे सलाम के सूरए अलम नश्रह सत्तर मर्तबा पढ़े।

यह नमाज़ कामिल ईमान के वास्ते बहुत अफ़ज़ल है।

इन्शा अल्लाह तबारक व तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को दुनिया से मुकम्मल ईमान के साथ उठाया जाएगा।

2. माहे रमज़ान की उन्तीसवीं शब को चार रकअत नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए क़द्र एक एक बार सूरए इख़्लास पाँच पाँच मर्तबा पढ़े बाद सलाम के दुरूद शरीफ़ एक सौ दफ़ा पढ़े।

इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को दरगाहे खुदावन्दी से बख़्शिश व मग़फ़िरत अ़ता की जाएगी।

वज़ाइफ 1. माहे रमज़ानुल मुबारक की उन्तीसवीं शब को सात मर्तबा सूरए वाक़िआ पढ़े। इन्शा अल्लाह तआला तरक़्क़ीए रिज़्क़ के लिए बहुत अफ़ज़ल है।

2. माहे रमज़ान की किसी शब में बाद नमाज़े इशा सात मर्तबा सूरए क़द्र पढ़ना बहुत अफ़ज़ल है। इन्शा अल्लाह तआला इसके पढ़ने से हर मुसीबत से नजात हासिल होगी।

जुमअतुल्-विदाअ रमज़ानुल्–मुबारक के आख़री जुमा को बाद

नमाज़े जुमा दो रकअ़त नमाज़ पढ़े। पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए ज़िलज़लाल एक बार सूरए इख़्लास दस मर्तबा दूसरी रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए काफ़िरून तीन मर्तबा पढ़े। बाद सलाम के दस मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर दो रकअ़त नामज़ पढ़े। पहली रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए तकासुर एक बार सूरए इख़्लास दस दफ़ा दूसरी रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के आयतल् कुर्सी तीन मर्तबा सूरए इख़्लास पचीस मर्तबा बाद सलाम के दुरूद शरीफ़ दस मर्तबा पढ़े।

इस नमाज़ के बेशुमार फ़ज़ाइल हैं और इस नमाज़ के पढ़ने वाले को अल्लाह पाक क़ियामत तक बेइन्तिहा इबादत का सवाब अ़ता फ़रमाएगा। इन्शा अल्लाह तआ़ला०

शव्वालुल-मुकर्रम

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि शव्वालुल्–मुकर्रम बड़ी अ़ज़मत व बुज़ुर्गी वाला महीना है और इस माह की इबादत का बहुत सवाब है।

नफ्ल नमाज़ 1. पहली शब माहे शव्वाल बाद नमाज़े इशा चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास इक्कीस–इक्कीस मर्तबा पढ़े इन्शा अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले के लिए अल्लाह पाक जन्नत के दरवाज़े खोल देगा और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर देगा।

2. शव्वाल की पहली शब बाद नमाज़े इशा चार रकअ़त नामज़ दो सलाम से पढ़ें हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास तीन–तीन दफ़ा सूरए फ़लक़ तीन–तीन दफ़ा सूरए नास तीन–तीन दफ़ा पढे बाद सलाम के कल्मए तमजीद सत्तर मर्तबा पढ़कर अपने गुनाहों से तौबा करे अल्लाह पाक इस नमाज़ की बरकत से इन्शा अल्लाह तआ़ला उसके गुनाह मुआफ़ कर उसकी तौबा कबूल फ़रमाएगा।

ईदुल्-फित्र शव्वाल की पहली तारीख़ बाद नमाज़े ज़ुहर आठ रकअ़त नमाज़ चार सलाम से पढ़े हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास पचीस पचीस मर्तबा पढ़नी है बाद सलाम के सत्तर मर्तबा *सुबहानल्लाह*, सत्तर मर्तबा इस्तिग़फ़ार और सत्तर मर्तबा यह दुरूद शरीफ़ पढ़ना है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۣالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन् नबीय्यिल उम्मीय्यि व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम0

इन्शा अल्लाहुल अ़ज़ीम इस नमाज़ पढ़ने वाले की अल्लाह पाक सत्तर हाजत दुनिया की और सत्तर हाजत आख़िरत की पूरी फ़रमाएगा और उसके लिए बेशुमार दरवाज़े अपनी रहमत के खोल देगा।

नफल रोज़ा माहे शव्वालुल–मुकर्रम की दूसरी तारीख़ से छः रोज़ा रखने की बड़ी फ़ज़ीलत है फरमाया रसूले अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने छः रोज़े शव्वाल के जो रखेगा अल्लाह पाक उसे हज़ार रोज़े का सवाब और उस पर दोज़ख़ की आग को हराम करेगा और उसके नामए आमाल में बेशुमार नेकियों का सवाब अ़ता करेगा। ख़्वाह यह रोज़े बराबर रखे या नाग़ा करके, मगर इसी महीने में तमाम रोज़े रखकर पूरे करने होंगे।

ज़ीक़अदा

1. माहे ज़ीक़अदा की पहली शब बाद नमाज़े इशा चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास तेईस–तेईस मर्तबा पढ़े बाद सलाम के अपने गुनाहों से तौबा करके अल्लाह तआ़ला से मग़फ़िरत तलब करे इन्शा अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ की बरकत से अल्लाह पाक उसकी बख़्शिश फ़रमाएगा और हश्र के दिन उसकी पेशानी आफ़ताब से ज़्यादा रौशन होगी।

2. माहे ज़ीक़अदा की हर रात को बाद नमाज़े इशा दो रकअ़त नामज़ पढ़े हर रकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए इख़लास तीन तीन बार पढ़े।

इन्शा अल्लाह तआ़ला इस नामज़ के पढ़ने वाले को अल्लाह तबारक व तआ़ला की तरफ़ से हर रात उमरे का सवाब अ़ता होगा।

3. ज़ीक़अदा के महीने में हर जुमा बाद नमाज़े ज़ुहर चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास इक्कीस–इक्कीस मर्तबा पढ़े।

अल्लाह पाक इस नमाज़ के पढ़ने वाले को इन्शा अल्लाह तआ़ला हज व उमरा का सवाब अ़ता फ़रमाएगा।

नफ्ल रोज़ा माहे ज़ीक़अ़दा में जो कोई किसी दिन एक रोज़ा रखे अल्लाह पाक उसको उमरे का सवाब अ़ता फ़रमाएगा और इस माह में पीर के रोज़ जो कोई रोज़ा रखे बेशुमार इबादत का सवाब मिलेगा।

ज़िलहिज्जा

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह पाक ने माहे ज़िलहिज्जा की बड़ी बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत का महीना फ़रमाया है। आपने फ़रमाया कि इस माह के दस दिन बहुत मुतबर्रक हैं और इसकी इबादत का बहुत सवाब है और फ़रमाया कि दस दिन में तीन दिन कसरत के साथ अपने रब की इबादत करो। वह तीन दिन यौम तरवियह यानी आठ तारीख़, यौमे अ़रफ़ा यानी नौ तारीख़, यौमे नहर ज़िलहिज्जा की दस तारीख़ हैं। यह तीन दिन तमाम दिनों से ज़्यादा मुबारक हैं और इसकी इबादत का सवाब भी है।

नफ्ल नमाज़ 1. माहे ज़िलहिज्जा की पलही शब बाद नमाज़े इशा चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास पचीस पचीस मर्तबा पढ़े। अल्लाह पाक इस नमाज़ के पढ़ने वाले को बेशुमार नमाज़ों का सवाब अ़ता फ़रमाएगा। इन्शा अल्लाह तआ़ला।

2. पहली शब से दसवीं शब तक रोज़ाना बाद नमाज़े इशा दो रकअ़त नमाज़ पढ़े हर रकअ़त में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए कौसर तीन–तीन बार सूरए इख़लास तीन–तीन मर्तबा पढ़े।

इन्शा अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ की अ़ज़मत के सबब अल्लाह पाक उसके नामए आमाल में बेशुमार नेकियां अ़ता फ़रमा कर बेशुमार बुराइयां मिटा देगा।

3. माहे ज़िलहिज्जा की पहली शब से दसवीं शब तक रोज़ाना बाद नमाज़े इशा दो रकअ़त नमाज़ पढ़े पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल–कुर्सी एक बार, सूरए इख़लास पन्द्रह मर्तबा, दूसरी रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए बक़रह का आख़री रूकूअ़ एक बार, सूरए इख़लास पन्द्रह दफ़ा पढ़े। इस नमाज़ के पढ़ने वाले के गुनाह अगर रेत के ज़र्रों के बराबर भी होंगे तब भी परवरदिगारे आलम अपनी क़ुदरते कामिला से इसके गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमा कर इन्शा अल्लाह तआ़ला

मगफ़िरत फरमाएगा।

जिलहिज्जा की दूसरी शब बाद नमाजे इशा चार रकअत नमाज दो सलाम से पढ़े और हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए आयतल–कुर्सी तीन बार, सूरए इख़लास तीन बार, सूरए फ़लक तीन बार, सूरए नास तीन बार पढ़े बाद सलाम के ग्यारह मर्तबा दुरूदे पाक पढ़कर दुआ के लिए हाथ उठा कर मुन्दर्जा–जैल दुआ पढ़ें। سُبْحَانَ الَّذِیْ الْعِزَّۃِ وَالْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ ذِی الْقُدْرَۃِ وَالْمَلَکُوْتِ سُبْحَانَ الْحَیِّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ ھُوَ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَ ھُوَ حَیٌّ لَا یَمُوْتُ سُبْحَانَ اللّٰہِ رَبِّ الْعِبَادِ وَالْبِلَادِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ کَثِیْرًا طَیِّبًا مُّبَارَکًا عَلٰی کُلِّ حَالٍ اَللّٰہُ اَکْبَرُ کَبِیْرًا رَبُّنَا وَجَلَالُہٗ وَقُدْرَتُہٗ بِکُلِّ مَکَانٍ

सुबहानल्लजिल इज्जति वल जबरूति सुबहान जिल कुदरति वल मलकूति सुबहानल हय्यिल्लज़ी ला यमूतु ला इलाह इल्लल्लाहु हुव युहयी व युमीतु व हुव हय्यु ला यमूतु सुबहानल्लाहि रब्बिल इबादि वलबिलादि वलहम्दु लिल्लाहि कसीरन तय्यिबन मुबारकन अला कुल्लि हालिन अल्लाहु अकबर कबीरन रब्बना व जलालहु व क़ुदरतुहू बिकुल्लि मकान०

दुआ के बाद फिर ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ पढ़कर बारगाहे रब्बुल–इज्जत में जो भी दुआ मांगे इन्शा अल्लाह तआला कबूल होगी।

4. जिलहिज्जा की पहली जुमेरात की शब बाद नमाजे इशा दो रकअत नमाज पढ़े हर रकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए कौसर एक बार सूरए इख़लास एक बार पढे। सिदके दिल से इस नमाज का पढ़ने वाला अपनी जिन्दगी में ही अपना मकाम बहिश्ते बरीं में देख लेगा। इन्शा अल्लाह तआला।

5. जिलहिज्जा के पहले जुमा को बाद नमाजे ज़ुहर छः रकअत नमाज़ तीन सलाम से पढ़े हर रकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए इख़लास पन्द्रह–पन्द्रह मर्तबा पढ़ें फिर बाद सलाम के दस मर्तबा मुन्दर्जा जैल कलमात पढ़े। لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْمَلِکُ الْحَقُّ الْمُبِیْنُ

ला इलाह इल्लल्लाहुल मलिकुल हक़्कुल मुबीन०

अव्वल व आख़िर ग्यारह मर्तबा दुरूद पाक पढ़कर नमाज़ की

क़बूलियत और बख़्शिशे गुनाह के लिए ख़ुदाए तआला से दुआ मांगे इन्शा अल्लाह तआला अल्लाह पाक अपनी क़ुदरते कामिला से इस नमाज़ के पढ़ने वाले को उसके गुनाह मुआफ़ फ़रमा कर दाख़िले जन्नत फ़रमाएगा।

वज़ाइफ 1. ज़िलहिज्जा की पहली और छटी तारीख़ को बाद नमाज़े फ़ज्र या ज़ुहर हस्ब ज़ैल कल्मात एक सौ मर्तबा पढ़ें।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ
وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔

ला इलाह इल्लल्लाहु वह–दहू ला शरी–क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युह्यी व युमीतु व हुव हय्युल ला यमूतु बि–यदिहिल ख़ैरु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०

2. ज़िलहिज्जा की दूसरी और सातवीं तारीख़ बाद नमाज़े फ़ज्र या ज़ुहर मुन्दर्जा ज़ैल कल्मात एक सौ मर्तबा पढ़े।

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اِلٰهًا وَّاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا
فَرْدًا وِتْرًا وَّلَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا۔

अश्हदु अल् ला इलाह इल्लल्लाहु वह–दहू ला शरी–क लहू इलाहंव् वाहिदन अहदन समद[illegible] यत्तख़िज साहिबंव वला वलदन०

3. ज़िलहिज़्ज़ा की तीसरी और आठवीं तारीख़ को बाद नमाज़े फ़ज्र या ज़ुहर मुन्दर्जा ज़ैल कल्मात एक सौ दफ़ा पढ़े।

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اَحَدًا صَمَدًا لَّمْ يَلِدْ وَلَمْ
يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

अश्हदु अल ला इलाह इल्लल्लाहु वह--दहू ला शरी–क लहू अहदन समदन लम यलिद व लम युलद व लम यकुल लहू कुफ़ुवन अहद०

4. ज़िलहिज्जा की चौथी और नवीं तारीख़ बाद नमाज़े फ़ज्र या ज़ुहर एक सौ मर्तबा हस्ब ज़ैल कल्मात पढ़े।

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

अश्हदु अल् ला इलाह इल्लल्लाहु वह–दहू ला शरी–क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युह्यी व युमीतु बियदिहिल ख़ैरु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०

5. जिलहिज्जा की पाँचवीं और दसवीं तारीख़ को बाद नमाज़े फज्र या ज़ुहर मुन्दर्जा जैल कल्मात को एक सौ दफ़ा पढ़ें।

حَسْبِيَ اللهُ وَكَفٰى سَمِعَ اللهُ لِمَنْ دَعَا لَيْسَ وَرَاءَ اللهِ مُنْتَهٰى مَنْ
لَمْ يَزَلْ كَرِيْمًا وَلَا يَزَالُ رَحِيْمًا

हस्बियल्लाहु व कफ़ा समिअल्लाहु लिमन दआ लै–स व राअल्लाहिल मुन्तहा मुम्हा–न लम यज़िल करीमंव वला यज़ालु रहीमा०

हज़रत रहबरे–आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं कि यह कल्मात बर्गुज़ीदा अशरा ज़िलहिज्जा में पढ़े निहायत ही मुअस्सिर हैं और इन मुतबर्रक कल्मात के पढ़ने से अव्वल बेशुमार इबादते इलाही का सवाब अता होगा। दूसरे दस हज़ार नेकियां उसके नामए आमाल में लिखी जाएंगी और दस हज़ार बुराइयां मिटा दी जाएंगी। तीसरे बेशुमार फ़रिश्ते उसके हक़ में दुआए रहमत करेंगे। चौथे उसके अमल सालेह होंगे। पाँचवें तिलावते कलाम पाक का सवाब इन्शा अल्लाह तआला बारगाहे रब्बुल–इज़्ज़त से अता किया जाएगा।

6. अशरए ज़िलहिज्जा में रोज़ाना बावज़ू किसी वक़्त भी सूरए फ़ज्र का पढ़ना बहुत अफ़ज़ल है आपने फ़रमाया कि जो कोई इन मुबारक अय्याम की हुरमत को मद्देनज़र रखते हुए सूरए फ़ज्र का विर्द करेगा हक़ तआला यौमे हिसाब उसकी बख़्शिश फ़रमाएगा और उसके लिए उस दिन कोई ख़ौफ़ न होगा।

7. ज़िलहिज्जा के दस दिन बराबर बकसरत सूरए ज़ुहा पढ़ने की बड़ी फ़ज़ीलत है आपने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला इस सूरह के पढ़ने वाले को इन्शा अल्लाह आतिशे दोज़ख़ से नजात अता फ़रमाएगा।

नफ़्ल शबे तरविया ज़िलहिज्जा की आठवीं शब बाद नमाज़े इशा सोलह रकअत नमाज़ आठ सलाम से पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल–कुर्सी एक–एक बार सूरए इख़लास पन्द्रह–पन्द्रह मर्तबा पढ़े।

इस नमाज़ का बेइन्तिहा सवाब है और यह नमाज़ वास्ते मग़फ़िरत बहुत अफ़ज़ल है।

नफ़्ल यौमे तरविया ज़िलहिज्जा की आठ तारीख़ बाद नमाज़े ज़ुहर छः रकअत नमाज़ तीन सलाम से पढ़े पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा के

बाद सूरए अस्त्र एक बार दूसरी में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए क़ुरैश एक बार तीसरी में सूरए फ़ातिहा के साथ सूरए काफ़िरून एक बार, चौथी में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए नस्र एक बार और छटी रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए इख़लास तीन–तीन मर्तबा पढ़े।

नफ़्ल शबे अरफ़ा जिलहिज्जा की नवीं शब को बाद नमाज़े इशा सौ रकअत नमाज़े नफ़्ल पचास सलाम से पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास एक–एक बार पढ़े अल्लाह पाक इस नमाज़ के पढ़ने वाले के पिछले तमाम गुनाह मुआफ़ फ़रमा कर इन्शा अल्लाहुल अज़ीम मग़फ़िरत फ़रमाएगा।

यौमे अरफ़ा ज़िलहिज्जा की 9 तारीख़ नमाज़े ज़ुहर और अस्त्र के दर्मियान चार रकअत नमाज़ एक सलाम से पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास पचास–पचास मर्तबा पढ़े बाद सलाम के सूरए इख़लास एक हज़ार दफ़ा पढ़े। इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ का सवाब अल्लाह पाक इस क़दर अता फ़रमाएगा कि कोई इस सवाब का अन्दाज़ा नहीं कर सकता।

वज़ाइफ़ 1 अरफ़ा [illegible] यह दुआ चन्द मर्तबा पढ़े।

يَا ذُخْرِيْ يَا ذَخِيْرَتِيْ يَا مُؤَمَّلِيْ عِنْدَ شِدَّتِيْ يَا رَجَائِيْ عِنْدَ مُصِيْبَتِيْ يَا شِفَائِيْ
عِنْدَ فَاقَتِيْ يَا أُنْسِيْ فِيْ وَحْدَتِيْ يَا رَحْمَتِيْ فِيْ وَقْتِيْ يَا دَلِيْلِيْ فِيْ حَيْرَتِيْ
بِكَ التَّوْفِيْقُ۔

या ज़ख़ीरी या ज़ख़ी–रती या मुमिद्दनी इन्द शिद्दती या रिजाली इन्द मुसीबती या ग़यासी इन्द ना–क़ती या उन्सी फी वह–दती या रह–मती फी वक़्ती या दलीली फी खै–रती बिकत्तौफीक़0

अल्लाह पाक इस दुआ के पढ़ने वाले को हज़ार नेकियां अता करता है और उसके हज़ार दर्जा जन्नत में बुलन्द करता है और उसकी हर हाजत कबूल फ़रमाता है। इन्शा अल्लाह तआला।

2 बरोज़ अरफ़ा बग़ैर शुमार किए बकसरत मुन्दर्जा ज़ैल कल्मात पढ़े। لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ اللَّيَالِيْ وَالدُّهُوْرِ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ أَمْوَاجِ الْبُحُوْرِ
لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ الرِّيَاحِ فِي الْبَرَارِيْ وَالصُّخُوْرِ۔ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ
الشَّوْكِ وَالشَّجَرِ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ الْحَجَرِ وَالْمَدَرِ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ

خَوَاطِرِ الظُّنُوْنِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ لَمْحَ الْعُيُوْنِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ فِي اللَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ
خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ ۝

ला इलाह इल्लल्लाहु अददल लियाली वददुहूरि ला इलाह इल्लल्लाहु अ–द–द अमवाजिल् बुहूरि ला इलाह इल्लल्लाहु अ–द–दरियाहि फील यमादियु वस्सुहूर० ला इलाह इल्लल्लाहु अ–द–दश्शवाकि वश्श–जरि ला इलाह इल्लल्लाहु अ–द–दल हजरि वल् मदरि ला इलाह इल्लल्लाहु अ–द–द खवातिरिज्जुनूनि ला इलाह इल्लल्लाहु लम–हल ओयूनि ला इलाह इल्लल्लाहु खैरुम–मिम्मा यज्मऊन ला इलाह इल्लल्लाहु फील्लैलि इजा अस–अ–स० वस्सुबहि इजा तनफ्फ–स व सल्लल्लाहु तआला अला खैरि खलकिही मुहम्मदिंव व आलिही व असहाबिही अजमईन०

परवरदिगारे आलम इस दुआ के पढ़ने वाले पर नारे दोज़ख हराम कर देता है और उसे दाखिले बहिश्त फरमाता है इन्शा अल्लाहुल–अज़ीम।

3. बरोज अरफा गुरुबे आफताब से कब्ल मुन्दर्जा–जैल कल्मात को एक सौ मर्तबा मअ़ दुरूद पाक अव्वल व आखिर पढ़े।

بِسْمِ اللّٰهِ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا يَسُوْقُ
الْخَيْرَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۔ بِسْمِ اللّٰهِ مَا شَآءَ اللّٰهُ كُلُّ نِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ مَا شَآءَ اللّٰهُ
الْخَيْرُ كُلُّهٗ بِيَدِ اللّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا يَصْرِفُ السُّوْٓءَ اِلَّا اللّٰهُ بِسْمِ اللّٰهِ
مَا شَآءَ اللّٰهُ وَمَا كَانَ نِعْمَةٌ فَمِنَ اللّٰهِ ۔

बिस्मिल्लाहि माशाअल्लाहु ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि बिस्मिल्लाहि माशाअल्लाहु ला यसूकुल खै–र इल्ला बिल्ला० बिस्मिल्लाहि माशाअल्लाहु कुल्ल निअ़मतिम्–मिनल्लाहि बिस्मिल्लाहि माशाअल्लाहुल खै–र कुल्लहू बियदिल्लाहि बिस्मिल्लाहि माशाअल्लाहु ला यसरिफुस्सूअ इल्ला बिल्लाहि बिस्मिल्लाहि माशाअल्लाहु व मा का–न निअ़मतुन फमिनल्लाह०

जो कोई अरफा के दिन यह दुआए मुअज़्ज़म पढ़े इसके पढ़ने वाले से अल्लाह तबारक व तआला फरमाएगा कि ऐ मेरे बन्दे तू जो कोई हाजत

तलब करेगा ख़्वाह दुनिया की हो या रोज़े आख़िरत की मैं तेरी हर दुआ कबूल करूंगा।

4. अरफ़ा के रोज कब्ल ग़ुरूबे आफ़ताब के मुन्दर्जा–ज़ैल कल्मात को एक सौ मर्तबा मआ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ना बहुत अफ़ज़ल है।

بِسْمِ اللّٰهِ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

बिस्मिल्लाहि माशा अल्लाहु ला हौल वला क़ुव्वतः इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम०

क़ियामत के दिन अल्लाह तबारक व तआला फ़रिश्तों से कहेगा कि ऐ फ़रिश्तो मेरे इस बन्दा को ब–हिफ़ाज़त बहिश्त में ले जाओ और इसे कोई तकलीफ़ न दो।

5. जो कोई अरफ़ा के दिन बकसरत कल्मए तौहीद पढ़ेगा इन्शा अल्लाह तआला पाक परवरदिगार उस पर अपनी रहमत से जन्नत वाजिब कर देगा और उस पर आतिशे दोज़ख हराम कर देगा।

इस कल्मा को पढ़ने का कोई वक़्त मुकर्रर नहीं है जिस वक़्त और जितना चाहे पढ़ता रहे।

नफ्ल शबे नहर 1. दसवीं शब बाद नमाज़े इशा चार रकअत नमाज़ एक सलाम से पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास एक बार, सूरए फ़लक एक बार, सूरए नास एक बार पढ़े। बाद सलाम के सत्तर दफ़ा *सुब्हानल्लाह* सत्तर मर्तबा दुरूद पाक पढ़कर अल्लाह पाक से अपने गुनाहों की मग़फ़िरत तलब करे। इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ की बरकत से अल्लाह तबारक व तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले के तमाम पिछले गुनाह मुआफ़ फ़रमाएगा।

2. शबे ईदुल–अज़हा नमाज़े इशा के बाद बारह रकअत नमाज़ छः सलाम से पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के आयतल–कुर्सी एक बार, सूरए इख़लास पन्द्रह–पन्द्रह मर्तबा पढ़े। इस नमाज़ के पढ़ने वाले को हक़ तआला शानहु की तरफ़ से अस्सी साल की इबादत का सवाब अ़ता किया जाएगा। अल्लाह पाक उसे अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रखेगा और इन्शा अल्लाह तआला उसके गुनाह मुआफ़ फ़रमा कर दाख़िले बहिश्त करेगा।

3. दसवीं शब बाद नमाज़े इशा बारह रकअत नमाज़ छः सलाम से पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए शम्स पाँच–पाँच दफ़ा पढ़े इस

नमाज़ से अफ़ज़ल उमरा का सवाब दूसरे अल्लाह पाक उस के रिज़्क में तरक्की अता फरमाता है।

नफ्ल यौमे नहर 1. ज़िलहिज्जा की दस तारीख नमाज़े ईदुल्–अज़हा के बाद चार रकअत नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए कौसर पन्द्रह–पन्द्रह दफ़ा पढ़े इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त से कुरबानी का सवाब अता फरमाएगा।

2. ईदुल अज़हा के दिन बाद नमाज़े ईद दो रकअत नमाज़ पढ़े हर रकअत में बाद सूरए फ़ातिहा के सूरए शम्स पांच–पांच मर्तबा पढ़े इन्शा अल्लाह तआला यह नमाज़ पढ़ने वाले को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हाजियों में [illegible] का सवाब अता फरमाएगा।

3. दस तारीख ज़िलहिज्जा को बाद नमाज़े ईद दो रकअत नमाज़ पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए कौसर तीन–तीन दफ़ा पढ़े।

इन्शा अल्लाह तआला इस [illegible] की बरकत से कुरबानी का सवाब अल्लाह तआला अता फरमाएगा।

4. [illegible] ज़िलहिज्जा [illegible] चार रकअत नमाज़ एक सलाम से [illegible] रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए आला एक बार, दूसरी में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए शम्स एक बार, तीसरी में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए लैल एक बार, चौथी में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए जुहा एक बार पढ़े।

इन्शा अल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को अल्लाह पाक [illegible] बख्श देगा।

5. [illegible] ज़िलहिज्जा [illegible] तारीख़ की नमाज़े ज़ुहर के बाद चार रकअत [illegible] और हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल् कुर्सी [illegible] बार सूरए इख़्लास ग्यारह ग्यारह मर्तबा सूरए फ़लक ग्यारह ग्यारह दफ़ा, सूरए नास भी ग्यारह ग्यारह मर्तबा पढ़े इस नमाज़ के पढ़ने वाले को रोज़े महशर में आसानी होगी। उसकी बुराईयां नेकियों में बदल जाएंगी और उसके गुनाह अल्लाह पाक मुआफ़ फरमा कर उसके सर पर नूरानी ताज रख कर बहिश्त में दाख़िल करेगा इन्शा अल्लाह तआला।

वज़ीफ़ा ईदुल–अज़हा के दिन किसी वक्त बावज़ू कुरआने करीम की

कम से कम सौ आयत तिलावत करे अल्लाह पाक उसे बहिश्त की बेशुमार नेअमतें अता फरमाएगा।

नफल रोज़ा माहे ज़िलहिज्जा की पहली से नौ तारीख तक के रोज़ों की बड़ी फज़ीलत है और सबसे ज़्यादा सात, आठ, नौ तारीख के रोज़े रखने के बहुत फज़ाइल हैं। अल्लाह पाक उन रोज़ों का बहुत सवाब अता फरमाएगा।

नफल इख्तितामे साल माहे ज़िलहिज्जा की आखरी तारीख ख्वाह उन्तीस हो या तीस, साल के आखरी दिन दो रकअत नमाज़ बाद नमाज़े ज़ुहर या मगरिब पढ़े हर रकअत में सूरए फातिहा के बाद जो भी सूरह चाहे पढ़े बाद सलाम के मुन्दर्जा ज़ैल कल्मात को सात मर्तबा पढ़ना चाहिए जो कि जान व माल की हिफाज़त के लिए बहुत अफज़ल हैं। वह कल्मात यह हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ، اَللّٰهُمَّ مَا عَمِلْتُ مِنْ عَمَلٍ فِيْ هٰذِهِ
السَّنَةِ مِمَّا نَهَيْتَنِيْ عَنْهُ وَلَمْ تَرْضَهُ وَنَسِيْتُهُ وَلَمْ تَنْسَهُ وَحَلِمْتَ عَلَيَّ بَعْدَ قُدْرَتِكَ عَلٰى عُقُوْبَتِيْ
وَدَعَوْتَنِيْ اِلَى التَّوْبَةِ بَعْدَ جُرْاَتِيْ عَلٰى مَعْصِيَتِكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْتَغْفِرُكَ
مِنْهُ فَاغْفِرْ لِيْ وَمَا عَمِلْتُ مِنْ عَمَلٍ تَرْضَاهُ وَوَعَدْتَنِيْ عَلَيْهِ الثَّوَابَ فَاَسْاَلُكَ
اَنْ تَتَقَبَّلَهُ مِنِّيْ وَلَا تَقْطَعْ رَجَائِيْ مِنْكَ يَا كَرِيْمُ
وَصَلَّى اللّٰهُ ... بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्लाहुम्मा मा अमिल्तु मिन अमलिन फी हाज़िहिस्स-नति मिम्मा नहै-तनी अन्हु व लम तरज़हु व नसीतुहु व लम तन्सहु व हलिम्ता अलय्या बअ्-द क़ुदरतिका अला उक़ूबती व दऔतनी इलत्तौबति बअ्-द जुरअती अला मअ्सियतिका अल्लाहुम्मा इन्नी अस्तग़फ़िरुका मिन्हु फ़ग़फ़िरली व मा अमिल्तु मिन अमलिन तरज़ाहु व व-अत्तनी अलैहिस्सवाब फ़असअलुका ... अन ततक़ब्बलहु मिन्नी व ला तक़्तअ् रजाई मिन्का या करीम ... बिरहमतिका या अर-हमर्राहिमीन

इन्शा अल्लाह तआला इस दुआ पढ़ने वाले को अल्लाह पाक हर साल में तमाम परेशानी आफतों और बलाओं से हिफाज़त फरमाएगा।

नवाफ़िल शब व रोज़

नमाज़े शम्बा 1. हफ्ता की शब बाद नमाज़े इशा बारह रकअ़त नमाज़ छः सलाम से पढ़ें हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद क़ुरआन पाक से जो भी सूरह याद हो पढ़ी जा सकती है। इन्शा अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को अल्लाह पाक अपनी रहमत से उसके गुनाह मुआ़फ़ कर के मग़फ़िरत फ़रमाता है और उसके लिए बहिश्त में आला मक़ाम अ़ता करेगा।

2. बरोज़ हफ़्ता सुबह दस ग्यारह बजे के दर्मियान या नमाज़े ज़ुहर के बाद चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम से पढ़े हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए काफ़िरून तीन–तीन मर्तबा पढ़े बाद सलाम के आयतल–कुर्सी एक बार पढ़े। इस नमाज़ के पढ़ने वाले को अल्लाह तआ़ला हज व उमरा का और एक साल के रोज़े का सवाब अ़ता करेगा।

नमाज़े यक शम्बा 1. इतवार की शब बाद नमाज़े इशा बीस रकअ़त नमाज़ दस सलाम से पढ़ें हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास पचास मर्तबा, सूरए फ़लक़ एक बार, सूरए नास एक बार पढ़े फिर बाद सलाम दुरूद पाक एक सौ दफ़ा इस्तिग़फ़ार एक सौ दफ़ा इसके बाद एक दफ़ा मुन्दर्जा ज़ैल कल्मात पढ़े।

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ. اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ
اَنَّ اٰدَمَ صَفْوَةُ اللّٰهِ وَفِطْرَتُهٗ وَاِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ وَمُوْسٰى كَلِيْمُ اللّٰهِ وَ
عِيْسٰى رُوْحُ اللّٰهِ سُبْحَانَهٗ وَمُحَمَّدًا حَبِيْبُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ۔

ला हौल वला क़ुव्वतः इल्ला बिल्लाहिल अ़लीय्यिल अ़ज़ीम अश्हदु अल ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न आ–द–म सफ़्–-वतुल्लाहि व फ़ति–रतुहू व इबराहीम ख़लीलुल्लाहि अ़ज़्ज़ व जल्ल व मूसा कलीमुल्लाहि व ईसा रूहुल्लाह सुबहानहू व मुहम्मदन हबीबुल्लाहि अ़ज़्ज़ व जल्ल०

इन्शा अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन परवरदिगारे आ़लम इस नमाज़ के पढ़ने वाले को पैग़म्बरों के साथ उठाएगा और जन्नतुल–फ़िरदौस में मोतियों से बना हुआ एक महल अ़ता करेगा और उस के लिए बहिश्त के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएंगे कि जिस दरवाज़े से चाहे बहिश्त में दाख़िल हो जाए।

2. बरोज़ इतवार सुबह दस ग्यारह के दर्मियान या नमाज़े ज़ुहर के बाद चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम से पढ़ें। हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए बक़रह का आख़री रुकूअ़ *आमनर्रसूल* ता *काफ़िरीन* एक–एक मर्तबा पढ़े ख़ुदावन्द करीम इस नमाज़ पढ़ने वाले को हर रकअ़त के एवज़ हजार रकअ़त का सवाब अ़ता करेगा और इन्शा अल्लाह तआ़ला उसकी दुनिया व आख़िरत के तमाम उमूर की दुआ क़बूल फ़रमाएगा।

नमाज़े दोशम्बा पीर की शब बाद नमाज़े इशा दो रकअ़त नमाज़ पढ़े और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास पन्द्रह–पन्द्रह मर्तबा पढ़े। बाद सलाम के आयतल कुर्सी पन्द्रह बार और इस्तिग़फ़ार पन्द्रह–पन्द्रह मर्तबा पढ़ें। अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले के तमाम ज़ाहिर व बातिन गुनाह मुआफ़ फ़रमा कर इन्शा अल्लाह तआ़ला मग़फ़िरत फ़माएगा।

2. बरोज़ पीर सुबह दस ग्यारह के दर्मियान या नमाज़े ज़ुहर के बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़े और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल–कुर्सी एक बार सूरए इख़लास एक बार, सूरए फ़लक़ एक बार सूरए नास एक बार पढ़े। बाद सलाम के दुरूद पाक दस मर्तबा और इस्तिग़फ़ार दस मर्तबा पढ़े। इन्शा अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को परवरदिगारे आलम अपने रहमते कामिला से मग़फ़िरत फ़रमा कर जन्नत में आला मक़ाम अ़ता फ़रमाएगा।

नामज़े सहशम्बा 1. मंगल की शब बाद नमाज़े इशा बारह रकअ़त नमाज़ छः सलाम से पढ़ें। हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए नस्र पाँच–पाँच मर्तबा पढ़ें। इन्शा अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को ख़ुदावन्दे करीम मग़फ़िरत फ़रमा कर बहिश्ते बरीं में आला दर्जा का महल अ़ता फ़रमाएगा।

2. बरोज़ मंगल सुबह दस ग्यारह बजे के दर्मियान या नमाज़े ज़ुहर के बाद दस रकअ़त नमाज़ पाँच सलाम से पढ़ें हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल्–कुर्सी एक–एक बार, सूरए इख़लास तीन–तीन बार पढ़ें। अल्लाह पाक इस नमाज़ के पढ़ने वाले के सत्तर साल के पिछले गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा कर मग़फ़िरत फ़रमाएगा। और इन्शा अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन शहीदों में उठाया जाएगा।

नमाज़े चहार शम्बा 1. चहार शम्बा (बुध) की शब बाद नमाज़े इशा दो रकअ़त नमाज़ पढ़े। अव्वल रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए फ़लक़ दस मर्तबा, दूसरी में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए नास दस मर्तबा पढ़ें। परवरदिगारे आलम इस नमाज़ के पढ़ने वाले को बेशुमार नमाज़ों का सवाब अ़ता फ़रमाएगा।

2. बरोज़ बुध सुबह दस ग्यारह के दर्मियान या बाद नमाज़े ज़ुहर बारह रकअ़त नमाज़ छः सलाम से पढ़ें और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास तीन बार सूरए फ़लक़ तीन बार, सूरए नास तीन बार पढ़ें। अल्लाह तबारक व तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले के गुनाह मुआफ़ फ़रमा कर मग़फ़िरत फ़र्माएगा और इन्शा अल्लाह तआ़ला उस पर से अ़ज़ाबे क़ब्र हटा देगा और बरोज़ हिसाब उसे सिद्दीक़ों में शामिल करेगा।

नमाज़े पंजशम्बा 1. जुमेरात की शब बाद नमाज़े इशा दो रकअ़त नमाज़ पढ़े हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल्-कुर्सी पाँच बार, सूरए इख़लास पाँच बार, सूरए फ़लक़ पाँच बार, सूरए नास पाँच बार पढ़ें। बाद सलाम के इस्तिग़फ़ार पन्द्रह मर्तबा पढ़ें। अल्लाह तबारक व तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को इन्शा अल्लाह तआ़ला बरोज़ हिसाब सिद्दीक़ों और शहीदों में उठाएगा। इस नमाज़ को पढ़कर वालिदैन को बख़्शने का बेहद सवाब है।

2. बरोज़ जुमेरात सुबह दस ग्यारह के दर्मियान या बाद नमाज़े ज़ुहर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए कौसर पन्द्रह मर्तबा पढ़ें। बाद सलाम के सूरए इख़लास चालीस दफ़ा पढ़ें। इन्शा अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले के नामए आमाल में एक साल की इबादत लिखी जाएगी और बारगाहे रब्बुल्-इज़्ज़त से हर आयत के बदले बेशुमार इबादते इलाही का सवाब अ़ता होगा।

नमाज़े जुमअ़ 1. जुमा की शब बाद नमाज़े इशा बारह रकअ़त नमाज़ छः सलाम से पढ़े और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास दस-दस मर्तबा पढ़े। ख़ुदावन्द करीम इस नमाज़ के पढ़ने वाले को बेशुमार इबादते इलाही का सवाब अ़ता फ़रमाएगा।

2. बरोज़ जुमा सुबह दस ग्यारह बजे के दर्मियान चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम से पढ़ें पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए आ़ला एक

बार, सूरए इख़लास पन्द्रह बार, दूसरी रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए कौसर एक बार, सूरए इख़लास पन्द्रह बार पढ़ें फिर इसी तर्तीब से दो रकअ़त और पढ़ें। अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले की हर दुआ़ क़बूल फ़रमाएगा और इन्शा अल्लाह तआ़ला उसकी क़ब्र में रौशनी होगी और दोज़ख़ से नजात पाकर दाख़िले बहिश्त किया जाएगा।

3. बरोज़ जुमा बाद नमाज़े ज़ुहर दो रकअ़त नमाज़ पढ़े अव्वल रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल–कुर्सी एक बार, सूरए फ़लक़ पचीस बार, दूसरी रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास एक बार, सूरए फ़लक़ बीस मर्तबा पढ़े फिर बाद सलाम के पचास मर्तबा

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

ला हौल वला क़ुव्वतः इल्ला बिल्लाहिल अ़लीय्यिल अ़ज़ीम० पढ़े।

अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को बेशुमार बहिश्ती नेअ़मतें अ़ता फ़रमाएगा और अपनी ज़िन्दगी में वह अपनी जगह बहिश्त में देख लेगा।

वज़ाइफ़े जुमअ़ 1. जुमा की शब या नमाज़े ज़ुहर से क़ब्ल सूरए कहफ़ पढ़नी बहुत अफ़ज़ल है पहले एक हफ़्ता तमाम आफ़तों और मुसीबतों से हिफ़ाज़त रहेगी। दूसरे हफ़्ते सत्तर मलाइका उसकी मग़फ़िरत की दुआ़ करेंगे। तीसरे हफ़्ते अल्लाह पाक उसके एक जुमा से दूसरे जुमा तक तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाएगा।

2. जुमा के रोज़ कसरत के साथ दुरूद पाक की बेहद फ़ज़ीलत है।

नमाज़े तरावीह

रमज़ानुल्–मुबारक में रोज़ाना नमाज़े इशा के फ़र्ज़ और सुन्नतों के बाद नमाज़े तरावीह की बीस रकअ़त दस सलाम से पढ़ना चाहिए। अगर हर रोज़ एक मुक़र्ररा मिक़दार में थोड़ा–थोड़ा क़ुरआन शरीफ़ पढ़ कर पूरे महीने में एक क़ुरआन शरीफ़ तरावीह में ख़त्म करें या हाफ़िज़ साहिब से क़ुरआन शरीफ़ सुनें और अगर यह मुम्किन न हो तो फिर इस तरह से तरावीह पढ़ी जाएं। पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए फ़ील, दूसरी में सूरए क़ुरैश, तीसरी में सूरए माऊन, चौथी में सूरए कौसर, पाँचवीं में सूरए काफ़िरून, छटी में सूरए नस्र, सातवीं में सूरए लहब, आठवीं में सूरए

इख़लास, नवीं में सूरए फ़लक़, दसवीं में सूरए नास पढ़े। फिर ग्यारहवीं रकअत से सूरए फ़ील शुरू कर के बीसवीं रकअत में सूरए नास पढ़नी है और ऊपर वाली तर्तीब से पढ़ें हर रकअत में सूरए फ़ातिहा पढ़नी है और हर चार रकअ़त के बाद सलाम फेर कर मुन्दर्जा ज़ैल कल्मात पढ़ें।

سُبْحَانَ ذِى الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ ۔ سُبْحَانَ ذِى الْعِزَّةِ وَالْعَظْمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبَرُوْتِ ۔ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوْتُ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰئِكَةِ وَالرُّوْحِ ۔ اَللّٰهُمَّ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ ۔

सुबहान ज़िल मुल्कि वल मलकूति सुबहा–न ज़िल इज़्ज़तिः वल अज़्–मतिः वल है–बतिः वल क़ुद–रतिः वल किब–रियाअि वल जब–रूति0 सुबहानल मलिकिल हय्यिल लज़ी ला यनामु व ला यमूतु सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुना व रब्बुल मलाइकतिः वर्रूहु0 अल्लाहुम्म अजिरना मिनन्नारि या मुजीरू या मुजीरू या मुजीरू0

नमाज़े तरावीह के बाद वित्र नफ़्ल पढ़कर नमाज़ ख़त्म करें। नमाज़े तरावीह का बेइन्तिहा सवाब है।

नमाज़े तहज्जुद

पिछली शब बेदार होकर नमाज़े तहज्जुद की बारह रकअ़त तीन या छः सलाम से पढ़ें। हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास इस तर्तीब से पढ़नी है। अव्वल रकअत में सूरए इख़लास बारह मर्तबा, दूसरी रकअत में सूरए इख़लास ग्यारह मर्तबा, तीसरी रकअ़त में सूरए इख़लास दस मर्तबा, चौथी रकअ़त में सूरए इख़लास नौ मर्तबा, पाँचवीं रकअ़त में सूरए इखलास आठ मर्तबा, छटी में सूरए इख़लास सात मर्तबा, सातवीं रकअ़त में सूरए इख़लास छः मर्तबा, आठवीं रकअ़त में सूरए इख़लास पाँच मर्तबा, नवीं रकअत में सूरए इख़लास चार मर्तबा, दसवीं रकअ़त में सूरए इख़लास तीन मर्तबा, ग्यारहवीं रकअ़त में सूरए इख़लास दो मर्तबा, बारहवीं रकअ़त में सूरए इख़लास एक मर्तबा पढ़ें। बाद सलाम नमाज़ से फ़ारिग़ होकर मुन्दर्जा ज़ैल कल्मात पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ

قَيِّمُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ اَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُكَ الْحَقُّ وَلِقَاؤُكَ الْحَقُّ وَالْجَنَّةُ
حَقٌّ وَّالنَّارُ حَقٌّ وَّنَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ حَقٌّ اَللّٰهُمَّ لَكَ اَسْلَمْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ
وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْكَ اَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ وَاِلَيْكَ حَاكَمْتُ فَاغْفِرْلِيْ مَا قَدَّمْتُ
وَمَا اَخَّرْتُ وَاَسْرَرْتُ وَاَنْتَ اِلٰهِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ ۔

अल्लाहुम्म लकल हम्दु अन्त नूरूस्समावाति वल अर्ज़ि व मन फीहिन्न व लकल हम्दु अन्त क़यिमुस्समावाति वल अर्ज़ि व मन फीहिन्न अन्तल हक़्क़ु वअ़्दुकल हक़्क़ु व लिक़ाउकल हक़्क़ु वल जन्नतुः हक़्क़ुन वन्नारु हक़0 व नबीयु–क मुहम्मदुन हक़्क़ुन वस्साअ़तुः हक़0 अल्लाहुम्म ल–क अस्लम्तु व बि–क आमन्तु व अ़लै–क तवक्कल्तु व इलै–क अनब्तु व बि–क ख़ासम्तु व इलै–क हाकम्तु फग़फ़िरली मा क़द दम्तु व मा अख़्ख़रतु व अस्–ररतु व अन्त इलाही ला इलाह इल्ला अन्त0

नमाज़े तहज्जुद की आठ रकअ़त, चार रकअ़त और दो रकअ़त भी पढ़ सकते हैं और सूरए फ़ातिहा के बाद क़ुरआन पाक की जो भी सूरह याद हो पढ़ी जा सकती है मगर बारह रकअ़त तर्तीब से पढ़ने का बहुत सवाब है। परवरदिगारे आ़लम इस नमाज़ के पढ़ने वाले की हर मुश्किल आसान करता है। उसकी दुआओं को क़बूलियत का दर्जा अ़ता होता है। उसके दर्जे अल्लाह पाक बुलन्द करता है उसकी मग़फ़िरत फरमाता है। नमाज़े तहज्जुद के बेइन्तिहा फ़ज़ाइल हैं।

क़ज़ा नमाज़ों का बयान

नमाज़ क़ज़ा करना बड़ा गुनाह है बाज़ आ़लिम कहते हैं कि जान कर नमाज़ छोड़ देने से आदमी काफ़िर हो जाता है। अगर कभी सोते हुए गुज़र जाए या ग़फलत से क़ज़ा हो जाए तो उसको जल्द अदा करे बीस तीस बरस या उससे भी ज़्यादा नमाज़ें क़ज़ा की हों तो उन सबको पढ़े। यह मशहूर है कि कज़ाए–उम्री की चार रकअ़तें पढ़ लेने से सब अदा हो जाती हैं बिल्कुल ग़लत है।

मसला :- क़ज़ा नमाज़ की नीयत में यह ज़रूरी है कि वक़्त और तारीख़ मुक़र्रर करके नीयत करे! लेकिन चूंकि तारीख़ का मुक़र्रर करना बहुत मुश्किल है इसलिए जिनके ज़िम्मे बहुत–सी क़ज़ा हों या जिनको यह

याद न रहा हो कि किस दिन की नमाज़ कज़ा हुई थी। आलिमों ने बताया है कि हर नमाज़े कज़ा की नीयत में यूं कह ले कि मेरे ज़िम्मे सब से अव्वल जो फलां नमाज (मसलन ज़ुहर या अस्र) है उसको पढ़ता हूं। मिसाल के तौर पर हम एक पूरी नीयत का ज़िक्र करते हैं। नीयत की मैंने चार रकअत नमाज फर्ज़ ज़ुहर की जो सबसे अव्वल मेरे ज़िम्मे है वास्ते अल्लाह तआला के रुख मेरा कअबा शरीफ की तरफ *अल्लाहु अकबर*।

मसला:- कज़ा सिर्फ़ फ़र्ज़ों और वित्रों की होती है। सुन्नतों और नफ़्लों की नहीं इस हिसाब से एक रोज की कज़ा नमाज़ों की बीस रकअतें हुई। सुबह के दो फ़र्ज़, ज़ुहर के चार फ़र्ज़, अस्र के चार फ़र्ज़, मग़रिब के तीन फ़र्ज़, इशा के चार फ़र्ज़ और तीन वित्र अगर रोज़ाना बीस रकअत कज़ा पढ़ लिया करे तो कुछ मुश्किल नहीं है। अल्लाह से डरने वाले तो एक दिन में कई–कई दिन की कज़ा पढ़ सकते हैं।

मसला:- अगर फज्र की नमाज कज़ा होजाए और उसी रोज़ ज़वाल से पहले–पहले पढ़े तो सुन्नत और फर्ज़ दोनों पढ़े।

मसला:- घर पर जो ज़ुहर, अस्र और इशा की नमाज़ कज़ा हुई हो उसकी कज़ा में चार ही रकअत पढ़े। गो सफर में पढ़ रहा हो। और जो ज़ुहर और अस्र और इशा की नमाज़ सफर में कज़ा हुई हो (बशर्ते कि वह सफ़र 51 मील का हो) तो उसकी कज़ा दो रकअत ही पढ़े अगरचे घर पर पढ़ रहा हो।

नफ्ल नमाज़ बराए सफर मुसाफ़िर को घर से रवाना होते वक़्त बा वज़ू होकर दो रकअत नमाज़े नफ़्ल पढ़कर रुख़्सत होना चाहिए। अव्वल रकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए काफ़िरून एक बार, और दूसरी रकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए इख़लास एक बार पढ़े। फिर सफ़र से वापसी पर इसी तर्कीब से दो रकअत नमाज़े नफ़्ल पढ़े।

यह नमाज़ मुसाफिर और उसके अफ़रादे ख़ानदान के लिए हिफ़ाज़ते जानो माल के लिए बहुत अफ़ज़ल है।

वज़ाइफ मुसाफिर सवार होने से क़ब्ल तीन मर्तबा आयतल कुर्सी पढ़े और अगर जहाज़ या कश्ती का सफ़र हो तो पहले यह दुआ पढ़े।

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ *बिस्मिल्लाहि मजरीहा व मुरसाहा इन्न रब्बी लग़फ़ूरुर्रहीम०* फिर तीन बार आयतल–कुर्सी पढ़े। इन्शा

अल्लाह तआला तमाम रास्ता हुक्मे इलाही से बेशुमार फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त पर मुक़र्रर कर दिए जाएंगे।

नमाज़े कुसूफ़ सूरज गहन के वक़्त दो रकअ़त नमाज़ बा–जमाअ़त पढ़ें और दोनों रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद जो भी सूरह क़ुरआन पाक की सबसे लम्बी याद हो पढ़नी चाहिए। बाद सलाम के जब तक गहन ख़त्म न हो किब्ला रुख़ बैठ कर दुआए ख़ैर और इस्तिग़फ़ार में मसरूफ़ रहना चाहिए और ख़ुदावन्दे करीम का ख़ौफ़ दिल में रखें कि उसने अपनी क़ुदरते कामिला से किस तरह सूरज जैसे रौशन सितारा को तारीक कर दिया है उसे हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है ख़्वातीन अपने घर में बग़ैर जमाअ़त के नमाज़े कुसूफ़ पढ़ें। सूरज गहन के वक़्त सदक़ा ख़ैरात करना बेहतर है।

नमाज़ेखुसूफ़ चाँद गहन के मौक़े पर बग़ैर जमाअ़त के दो रकअ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़ें और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद क़ुरआन पाक की जो भी सूरह बड़ी से बड़ी याद हो पढ़े बाद सलाम के तौबा इस्तिग़फ़ार में मशग़ूल रहना चाहिए। ख़ौफ़े इलाही दिल में पैदा करें कि अल्लाह पाक ने अपने हुक्म से चाँद का नूर एक पल में छीन कर उसे कैसा बे रौनक़ कर दिया है। बेशक परवरदिगारे आलम हर चीज़ पर क़ादिर है।

नमाज़ बराए नजात सख़्तीए क़ब्र

शबे जुमा बाद नमाज़े इशा दो रकअ़त नमाज़ (ब–नीयत नजात सख़्तीए क़ब्र) पढ़ें। हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए ज़िलज़ाल पन्द्रह–पन्द्रह मर्तबा पढ़ें। अगर सूरए ज़िलज़ाल याद न हो तो हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास पन्द्रह–पन्द्रह मर्तबा पढ़ सकते हैं। परवरदिगारे आलम हर जुमा की शब इस नमाज़ के पढ़ने वाले को उसके इन्तेक़ाल के बाद अज़ाबे क़ब्र से नजात देकर सख़्ती को रफ़अ़ कर देगा। इन्शा अल्लाह तआ़ला।

वज़ाइफ 1. हर नमाज़ के बाद रोज़ाना तीन मर्तबा मुन्दर्जा ज़ैल कल्मात पढ़े।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम0 बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लति:

रसूलिल्लाह०

इन्शा अल्लाह तआ़ला इन कल्मात के पढ़ने वाले पर से अल्लाह पाक अज़ाबे क़ब्र, तंगीए गोर, तारीकीए क़ब्र को रफ़अ़ कर देगा।

2. बाद नमाज़े इशा हर शब एक मर्तबा सूरए मुल्क तीन मर्तबा सूरए तकासुर पढ़ने से अल्लाह पाक उसे अज़ाबे क़ब्र और नारे दोज़ख़ से नजात देगा। इन्शा अल्लाह तआला।

सलातुत् तस्बीह

नमाज़े तस्बीह इस नमाज़ का बेइन्तिहा अज्र व सवाब है और इसकी चार रकअ़त हैं मकरूह वक़्त के इलावा जब चाहे पढ़ सकता है। बेहतर यह है कि ज़ुहर से पहले पढ़े। इसका तरीक़ा यह है कि तकबीरे तहरीमा के बाद सना पढ़े। सना के बाद पन्द्रह बार यह कल्मा पढ़े।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

सुबहानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि व ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर०

फिर तअव्वुज़ और तस्मिया और फ़ातिहा और सूरह पढ़कर दस बार यही कल्मा पढ़े। फिर रुकूअ में जाकर रुकूअ की तस्बीह के बाद दस बार यही कल्मा पढ़े। फिर रुकूअ से उठ कर तस्मीअ़ व तहमीद के बाद दस बार यही कल्मा पढ़े फिर सज्दे में जाकर सज्दे की तस्बीह के बाद दस बार, फिर सज्दा से उठकर जलसा (दोनों सज्दों के दर्मियान बैठना) में दस बार, फिर दूसरे सज्दे में तस्बीह के बाद दस बार, फिर दूसरी रकअ़त में फातिहा से पहले पन्द्रह बार, फिर इसी तर्तीब से चार रकअ़तें पढ़े। हर रकअ़त में 75 बार और चारों रकअ़तों में तीन सौ बार, यह कल्मा पढ़ा जाएगा।

लेकिन यह याद रहे कि पहले क़अ़दा में इल्तिजा के बाद दुरूद शरीफ़ भी पढ़ेंगे और यह भी याद रहे कि तीसरी रकअ़त के लिए जब खड़े हों तो पहली रकअ़त की तरह सना, तअव्वुज़, तस्मिया भी पढ़ेंगे।